श्रीफल जैन न्यूज
की प्रस्तुति

जैन आदि शक्ति

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेषांक

8
MARCH
HAPPY WOMEN'S DAY

प्रस्तुति
रेखा संजय जैन
संपादक
9460155006

जैन शासन में मातृ शक्ति

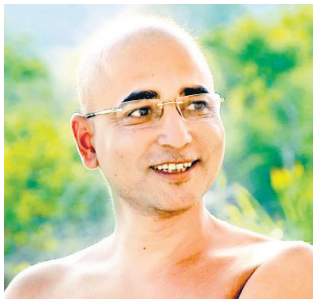

अन्तर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज

प्रवचनसार ग्रंथ में श्रमणों के श्रद्धा पुरुष, अध्यात्म सरोवर के राजहंस आचार्य भगवंत श्री कुंदकुंद स्वामी ने अपनी पावन पीयूष देशना में उद्धृत किया है कि केवली प्रभु का रुकना, चलना, बैठना और दिव्य ध्वनि का खिरना स्वयं की इच्छा से नहीं होता, किंतु सहज ही होता है। उसकी सहजता, स्वभावता को स्पष्ट करते हुए आचार्य भगवंत अंतिम चरण में उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं कि जैसे स्त्रियों में मताचार स्वभाव से पाया जाता है, वैसे ही प्रभु पुरुषार्थ प्रयास नहीं करते।

आचार्य भगवंत ने मां की ममता शब्द का प्रयोग करके मातृत्व गुण का महत्व इतने सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। व्यवहार में भी ईश्वर को परमात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। आकाश को आसमां कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। संत को महात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। विश्व की समस्त विशालताओ में विशालतम है-परमात्मा, आसमां और महात्मा। किंतु ये शब्द संग्रह भी मां वर्ण के बिना अधूरे हैं, अपूर्ण हैं।

इस अवसर्पिणी युग का प्रारंभ ही स्त्री शक्ति की विकास एवं महत्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधारशिला है। प्रभु श्री आदिनाथ ने अपने ग्रहरथावस्था में भी भोगभूमि से कर्मभूमि में परिणत भरत भेत्र की आकुलित जनता को षटकर्म का उपदेश देश जीवन निर्वाह की कला से परिचित कराया। असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य और शिल्प। प्रभु ने स्त्री जाति के महत्व को इस युग में रेखांकित करते हुए मसि यानि लेखन विधा और विद्या, इन दो कलाओं का शिक्षण अपनी पुत्रियों ब्राम्ही और सुंदरी को ही दीं। स्त्री शिक्षा, स्त्री सशक्तीकरण का इससे ज्यादा बलवान उदाहरण और दूसरा नहीं हो सकता।

जैनागम के अनुसार तीर्थंकर की पुत्रियां नहीं होतीं, परंतु युग के आदि में ही वृषभनाथ प्रभु की पुत्रियों ब्राम्ही और सुंदरी के जन्म से ही हम यही तात्पर्य निकालते हैं कि पंचम युग में स्त्रियों के महत्व के रेखांकन के लिए तैयार कर रही थीं। उन्हें शिक्षा-विधा से समृद्धव करना ही स्त्री सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। प्रभु वृषभनाथ से वर्द्धमान तक इसी तरह सभी तीर्थंकरों के शासनकाल में उनकी रानियों को सम्मानीय स्थान दिया गया। प्रभु राम ने तो मात्र अपनी सौतेली मां को आघात ना पहुंचे, इसलिए स्वयं ही वन गमन के

आचार्य भगवंत ने मां की ममता शब्द का प्रयोग करके मातृत्व गुण का महत्व इतने सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। व्यवहार में भी ईश्वर को परमात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। आकाश को आसमां कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। संत को महात्मा कहा जाता है, जिसका अंतिम वर्ण है मां। विश्व की समस्त विशालताओ में विशालतम है-परमात्मा, आसमां और महात्मा। किंतु ये शब्द संग्रह भी मां वर्ण के बिना अधूरे हैं, अपूर्ण हैं।

कठिन निर्णय का वरण कर लिया था।

आदिपुराण एवं प्रतिष्ठा ग्रंथों के अनुसार प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा के अवसर पर लगभग सभी मांगलिक क्रियाओं का प्रारंभ सौभाग्यवती महिलाओं के पवित्र हाथों से ही संपन्न होता है।

जैन शासन अथवा यूं कहें कि मानव जीवन के अंकुरण, उसके विकास आदि सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर महिला अथवा स्त्री की भूमिका की किन्हीं भी परिपेक्ष्य में कम नहीं आंका गया है।

शब्द शास्त्र में स्त्री शब्द के अन्य कई पर्यायवाची शब्द कहे हैं, उदाहरण स्वरूप-

- **उभयकुल वद्धिनी** : पुत्र तो मात्र एक ही कुल को गौरवान्वित करता है, जबकि स्त्री अपने आचरण, व्यवहार से माता-पिता को तो सम्मान दिलाती ही है, किंतु अपनी समन्वय शीलता, धैर्य एवं शील के संतुलन से ससुराल को भी मंदिर बना देती है।
- **दुहिता** : दो कुलों के हितों का निमित्त होने के कारण दुहिता यह सार्थक संज्ञा है।
- **महिला** : मही यानि दही को मथने पर शेष बचा पदार्थ, जिसे निर्विकृति कहा जाता है। अपनी पर्याय के अभिमान से चूर पथभ्रष्ट पुरुष को कभी मां, कभी बहन, कभी पत्नी, कभी मित्र बनकर राह पर लाती है।
- **अबला** : बला का अर्थ होता है परेशानी। जिसे हम परेशानी मानते हैं, अबला शब्द कहता है कि बला हो ही नहीं सकती। जो अपनी कला से परिवार को आंतरिक सुरक्षा का अहसास कराती है। पुरुष को मां और बहिन के रूप में वरद हस्त देकर उसकी बला को निर्बल बना देती है वह।
- **नारी** : अरि का अर्थर् होता है शत्रु। यह शब्द ही कह रहा है, जो अपने किसी भी रूप में शत्रु नहीं हो सकती। प्रत्येक रूप में वह रक्षक है, मित्र है। कहते हैं-पुत्र कुपुत्र हो सकता है, किंतु माता कुमाता नहीं होती।

मां शब्द के मायने किंतु आज बदलते जा रहे हैं। देवी का रूप माने जाने वाली स्त्री वर्तमान युग में मात्र एक भोग की वस्तु के रूप में सिमटती जा रही है। यह गहरे चिंतन का विषय है कि जहां भारत क्षेत्र के इस पंचम युग में निरंतर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के नारे लग रहे हैं। स्त्री सशक्तीकरण के गीत चहुंओर उच्च स्वरों में गाए जा रहे हैं। भौतिक वातावरण में स्त्री अपनी घर की चारदीवारों से बाहर निकलकर स्वतंत्र वातावरण में अठखेलियां कर रही है, फिर अचानक गर्भपात, स्त्रीशोषण की घटनाएं निरंतर क्यों बढ़ती जा रही हैं।

एक महत्वपूर्ण वक्तव्य स्मरण आ रहा है, लार्ड मैकाले का, जो 200 वर्ष पूर्व लगभग ब्रिटिश संसद में कहा गया था। उसे वैसा का वैसा ही उसी भाषा में उदधृत कर रहा हूं.....

I have traveled across the length and breadth of INDIA and I have not seen one person who is beggar, who is thief. Such wealth I have seen in this country. Such high moral values, people of such caliber, that I don't think that we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system; her culture for if the INDIA's think that all the that is foreign and English is good and greater than their own, they will loose their self esteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation.

इस पूरे वक्तव्य का सबसे महत्वपूर्ण वाक्यांश है, भारत की गुरुकुल पद्धति से सहित शिक्षा व्यवस्था को नष्ट करना। बच्चे-बच्चियों की अलग-अलग अध्ययन व्यवस्था, वस्त्रों और खान-पान का स्तर, इन सब महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटकों को उनके मूलभूत ढांचे से ढहा देना उनका लक्ष्य था। हम भारतीय इसी षडयंत्र को भांप नहीं पाए और अपसंस्कृति का यह षडयंत्र आज हमारे ऋषि-कृषि-सती संस्कृति की मनोहर बगिया की जड़ों में मट्ठा डालता चला गया। बाहर से धन्य-धान्य से समृद्धता बढ़ती दिख रही है, किंतु चारित्र के मामले में हम पूरी तरह से खोखले होते जा रहे हैं।

स्वभाव से सरलता से पदार्थों की ओर आकर्षित हो जाने वाला महिला समाज सबसे पहला निशाना बन गई, इस अपसंस्कृति का।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार तो भारत में पूर्व से था ही, किंतु महिलाओं ने आधुनिकता की अंधी दौड़ में अपने चारित्र के महत्व को विस्मृत कर दिया। गृहस्वामिनी का विशेषण उन्हें चुभने लगा और घर की चारदीवारों से बाहर का वातावरण उन्हें लुभाने लगा। घर की चारदीवारी से बाहर निकलना कदापि बुरा नहीं था, स्वतंत्रता कभी भी बुरी नहीं होती, बुरी होती है तो स्वच्छंदता।

स्वतंत्रता कब स्वच्छंदता में परिवर्तित हो जाती है, पता नहीं नहीं चलता। अब इन्हें character से ज्यादा career की चिंता है। अपने अस्तित्व की सिद्धि के लिए अब कोई भी समझौता करने को तैयार हो चुकी हैं।

घर की दीवारों को तो कैकयी ने भी लांघा था परंतु मर्यादा को नहीं लांघा कभी। दशरथ के रथ की सारथी बनकर युद्धभूमि पर विजयपताका फहराने का साधन बनी थी वह। मैना ने अपनी भक्ति भावना से सैकड़ों कोटियों को भयंकर वेदना से मुक्त करा दिया था। दशानन ने सीता का अपहरण तो कर लिया, मगर उसके शील के आगे उसे भी झुकना ही पड़ा।

परंतु इन सारी सतियों के जीवन पर नजर करने पर एक बहुमूल्य बात सामने आती है, स्त्री की सबसे बड़ी दुश्मन स्वयं स्त्री ही है। आज हमें मीडिया से ज्ञात हुआ है कि हर गर्भवती महिला और उसका संबंधी महिला परिवार चाहता है कि उनके यहां प्रथम संतान कन्या नहीं, बल्कि पुत्र ही हो। इससे अलग पुरुष चाहता है कि उसकी पहली संतान कन्या हो। तात्पर्य स्पष्ट है, गर्भपात का एक महत्वपूर्ण कारण है स्त्री का अपने कुल को रोशन करने वाले पुत्र की भावना रखना। जब स्त्री स्वयं ही स्त्री को नहीं चाहेगी तो स्त्री कभी सम्मान को प्राप्त नहीं हो सकती। मैं और मेरा की स्वार्थ भावना से ही रामायाण और महाभारत जैसे कथानक सम्मुख आते हैं।

प्राणप्रिय राम भी कैकयी को पुत्र प्रेम के आगे सामान्य लगने लगे।

संस्कार, प्रेम और त्याग का प्रतीक है महिला :

महिला का सम्मान, समानता और सशक्तीकरण सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी

रेखा संजय जैन
संपादक, श्रीफल जैन न्यूज
9460155006

महिला समाज और परिवार की नींव होती है, जो संस्कार, प्रेम और त्याग का प्रतीक है। वह हर क्षेत्र में अपने योगदान से समाज के विकास में अहम भूमिका निभाती है। महिला का सम्मान, समानता और सशक्तीकरण सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि वह अपनी पूरी क्षमता से समाज में योगदान दे सके। पढ़िए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर श्रीफल जैन न्यूज की संपादक रेखा जैन का विशेष आलेख....

नारी ही शक्ति, नारी ही है मान,
नारी के बिना अधूरा यह जहान।
सृजन की यह अनुपम कहानी,
हर रिश्ते की यह है निशानी।

माँ बनकर यह ममता लुटाती,
बेटी बन घर रौशन कर जाती।
बहन बन स्नेह बरसाती,
पत्नी बन सच्ची संगिनी कहलाती।

शिक्षा, विज्ञान, राजनीति में आगे,
हर मुश्किल में बढ़ती साहस से आगे।
त्याग, समर्पण की है पहचान,
नारी के बिना कैसा सम्मान?

आओ उसे हम प्यार दें,
उसके सपनों को उड़ान अपार दें।
सम्मान, समानता, हक दिलाएँ,
नारी को सशक्त बनाएँ!

महिला केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि संस्कृति, सभ्यता और समाज की रीढ़ होती है। वह एक माँ, बहन, बेटी, पत्नी और मित्र के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाती है। किसी भी समाज की उन्नति और विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

परिवार की आधारशिला

महिला परिवार की नींव होती है। वह संस्कार, प्रेम और त्याग का प्रतीक है। माँ के रूप में वह बच्चों को जीवन के सही मूल्यों की शिक्षा देती है और एक सभ्य समाज के निर्माण में योगदान देती है।

समाज और राष्ट्र निर्माण में योगदान

महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, खेल, राजनीति, रक्षा और व्यापार जैसे हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रही हैं। वे समाज को जागरूक और सशक्त बनाती हैं, जिससे सामाजिक विकास तेज़ होता है।

आर्थिक विकास में भागीदारी

महिलाएँ आज स्वरोजगार, व्यवसाय और नौकरियों में पुरुषों के समान योगदान दे रही हैं। महिला उद्यमिता (Women Entrepreneurship) देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सहायक है।

संस्कारों की वाहक

महिलाएँ समाज की संस्कृति और परंपराओं को संजोने और आगे बढ़ाने का काम करती हैं। वे संस्कारों और नैतिक मूल्यों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाती हैं।

संघर्ष और सशक्तीकरण का प्रतीक

इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई, सरोजिनी नायडू, मदर टेरेसा, कल्पना चावला, इंदिरा गांधी जैसी महिलाओं ने यह साबित किया कि वे केवल घर तक सीमित नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित कर सकती हैं।

महिला केवल जीवनदायिनी ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। उसका सम्मान, सुरक्षा और समानता सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है। जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। इसलिए, हमें हर महिला को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

दिगम्बर जैन परम्परा में माताजी

दिगम्बर जैन परम्परा के साधु की चर्चा आते ही मन-मस्तिष्क में कठोर तपस्वी, त्यागमूर्ति, संसार की समस्त क्रियाओं से उदासीन संत की छवि उभरती है। ऐसे मुनि या आर्यिका जिन्हें सब कुछ असार एवं त्याज्य दिखता है जो संसार को छोड़कर, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, आने-जाने की सहज क्रियाओं में दर्जनों नहीं सैकड़ों प्रतिबन्ध लगा देते हैं, बस इसी भय से आज का युवा इन संतों से दूर भागता है। जैन समाज में ऐसे अनेकों आर्यिकाएं हुई हैं, जो हर जैन व्यक्ति के लिए परम पूज्य हैं और अनुकरणीय हैं। जानते हैं इनके बारे में-

चन्दनामती माताजी

आधुनिक जीवन शैली, उसकी मजबूरियों, आवश्यकताओं एवं युवा मानसिकता को करीब से जानने एवं समझने वाली एक साध्वी, जिनको इस युग की महान साधिका, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने स्वयं तराशा है, जो अपने सहज, सरल, सौम्य एवं मधुर व्यक्तित्व से युवा मन को आर्किषत करती हैं, जो अपनी करुणा, ममता एवं वात्सल्य से युवाओं के हृदय को झंकृत करती है एवं अपनी तर्वपूर्ण वैज्ञानिक विवेचनाओं से उनकी जिज्ञासाओं को तृप्त करती है ऐसी दिगम्बर जैन साध्वी का नाम है- प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी। पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने कुमारी अवस्था में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर एक अभिनव परम्परा का सूत्रपात किया। जिसके फलस्वरूप देश में आज शताधिक ऐसी आर्यिकायें हैं जिन्होंने गृहस्थाश्रम में प्रवेश के पूर्व ही संसार की असारता का ज्ञान प्राप्त कर आर्यिका के महाव्रतों को अंगीकार किया किन्तु इस परम्परा का सूत्रपात करने वाली गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम आर्यिका शिष्या होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ कु. माधुरी जैन को, जो आज प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के रूप में अपनी ज्ञान रश्मियों से दिग्दिगन्त को आलोकित कर रही हैं। गृहस्थाश्रम की बड़ी बहिन एवं जैन समाज की वरिष्ठतम साध्वी, आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को आपने 1969 में गुरु के रूप में स्वीकार कर त्याग/ अध्ययन की ओर कदम बढ़ाया हुई। 1969 से आप सतत छाया के समान पूज्य माताजी के संघ में रहकर आगमों का गुरुमुख से अध्ययन कर ही रही हैं। किन्तु इसके साथ ही विगत 44 वर्षों से सर्मिपत होकर पूज्य गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी के संघ की निर्विकल्प सेवा आपकी अनन्य गुरु भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। आप समर्पण एवं गुरुभक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपने समर्पण एवं गुरुभक्ति से र्अजित ज्ञान का सदुपयोग भी आत्म कल्याण के अतिरिक्त गुरु भक्ति एवं गुरु गुण लेखन में ही बहुलता से किया है। आगम ग्रन्थों तथा सम-सामयिक साहित्य के गहन अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों एवं स्वरचित भजनों / मुक्तकों से युक्त आपके प्रवचन/ उद्बोधन युवा पीढ़ी को बरबस अपनी ओर आर्किषत करते हैं। बड़ी से बड़ी सभा को मंत्रमुग्ध करने की आपमें अपूर्व क्षमता है। सभा में श्रोताओं से जीवन्त संवाद से आप युवावर्ग में बहुत लोकप्रिय है एवं वे सुरुचिपूर्वक आपकी सभा में आकर ज्ञान लाभ लेते हैं। आपके प्रवचन इतने सटीक, सुसंगत एवं क्रमबद्ध होते हैं कि प्रवचनोपरान्त प्रत्येक श्रोता के पास सोचने, विचारने एवं आचरण करने हेतु कुछ न कुछ सामग्री होती हैं। विषय की सरलता, लयबद्धता एवं प्रभावोत्पादकता आपकी विशेषता हैं। काव्य रचना आपकी मौलिक प्रतिभा है फलतः आपकी कृतियों में भजन संग्रह, आरती संग्रह, चालीसा संग्रह, पूजाओं का बाहुल्य है तथापि आपने कुछ अत्यन्त गम्भीर प्रकृति के कार्य किये हैं जिनमें सर्वोपरि है सिद्धान्त ग्रंथ षट्खण्डागम की गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कृत सिद्धान्त चिन्तामणि शीर्षक संस्कृत टीका की हिन्दी टीका। षट्खण्डागम की धवला टीका के 5 खण्डों को समाहित करने वाली 16 पुस्तकों की माताजी कृत सिद्धान्त चिन्तामणि शीर्षक संस्कृत टीका तो प्रकाशित हो चुकी है किन्तु आपके द्वारा की जा रही हिन्दी टीका का कार्य भी प्रगति की ओर है। सम सामयिक विषयों पर आपके दर्जनों लेख तथा कई शोधपूर्ण आलेख भी विविध पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। सामाजिक पुनर्रचना के अनुष्ठान में आपने केन्द्र बिन्दु बनाया युवा पीढ़ी को। दीक्षा पूर्व आपने अपनी शास्त्र सभाओं एवं शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से युवाओं को संस्कारित करने तथा उनमें धर्म के प्रति व्याप्त भ्रांतियों को दूर करने का महती कार्य किया। धर्म से कोसों दूर रहने वाला युवा जो धर्म को पाखण्ड एवं ढकोसला कहता है, जब आपके सम्पर्क में आता है तो वह जान पाता है कि धर्म एक जीवन शैली है जिसे अपनाकर तनाव मुक्त जीवन जिया जा सकता है। इससे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है। समाज में सार्थक कर पाने का संतोष उपजता है एवं मिलती है वर्तमान से संतुष्टि, अहसास होता है जाति एवं कुल के गौरव का, जागती है कुछ कर गुजरने की तमन्ना तथा निखरता है आत्म विश्वास। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री ने हमें जीवन जीने की कला सिखाई है जीवन को सार्थकता दी है।

आर्यिका सुपार्श्वमती माताजी

आज दिगम्बर जैन समाज में जहाँ अनेक तपस्वी विद्वान आचार्य मुनिराज विराजमान हैं वहीं अपने तप और वैदुष्य से विद्वत्संसार को चकित करने वाली आर्यिका साध्वियाँ भी विद्यमान हैं इन्हीं में से एक हैं-आर्यिका 105 सुपार्श्वमती माताजी। आपकी बहुजता, विद्या-व्यासंग, सूक्ष्म-तलस्पिशनी बुद्धि, अकाट्यतर्कणा शक्ति एवं हृदयग्राह्य प्रतिपादन शैली अद्भुत है। और विद्वत्-संसार को भी विमुग्ध करने वाली है। राजस्थान के मरुस्थल नागौर जिले के अंतर्गत डेह से उत्तर की ओर सोलह मील पर मैनसर नाम के गांव में दिवस में सहगृस्थ श्री हरक चंदजी चूड़ीवाल के घर वि. सं. 1985 मिती फाल्गुन शुक्ला नवमी के शुभ दिवस में एक कन्यारत्न का जन्म हुआ-नाम रखा गया 'भंवरी'। भूरे-पूरे घर में भाई-बहिनों के साथ बालिका भी लालित-पालित हुई पर तब शायद ही कोई जानता होगा कि यह बालिका भविष्य में परम विदुषी आर्यिका के रूप में प्रगट होगी। अपनी 7-8 वर्ष की आयु में आपको महान् योगी तपस्वी साधुराज 108 आचार्यकल्प श्री चन्द्रसागर महारजा के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था जब वे डेह से लालगढ़, मैनसर पधारे थे। आचार्य श्री वीरसागरजी ने भंवरीबाई के वैराग्यभाव, अच्छी स्मरण शक्ति एवं स्वाध्याय की रुचि देखकर संघस्थ ब्रह्मचारी श्री राजमलजी (वर्तमान में आचार्य 108 श्री अजितसागरजी) को आज्ञा दी कि ब्रह्मचारिणी भंवरीबाई को संस्कृत, प्राकृत का अध्ययन कराये तथा अध्यात्म-ग्रंथों का स्वाध्याय कराये। विद्यागुरु का ही महान प्रताप है कि आप आज चारों ही अनुयोगों के साथ-साथ संस्कृत भाषा में भी परम निष्णात हो गईं। ज्यों-ज्यों आपका ज्ञान बढ़ने लगा उसका फल वैराग्यभाव भी प्रकट हुआ। वि. सं. 2014 भाद्रपद शुक्ला 6 भगवान सुपार्श्वनाथ के गर्भकल्याणक के दिन विशाल जनसमूह के मध्य द्वय आचार्य संघों की उपस्थिति में (आचार्य 108 श्री महावीरकीर्ति जी महाराज भी तब ससंघ वहीं विराज रहे थे) ब्र. भंवरीबाई ने आचार्य 108 श्री वीरसागर जी महाराज के कर-कमलों से स्त्री-पर्याय को धन्य करने वाली आर्यिका दीक्षा ग्रहण की। भगवान सुपार्श्वनाथ का कल्याणक दिवस होने से आपका नाम सुपार्श्वमती रखा गया। आचार्यश्री के हाथों से यह अन्तिम दीक्षा थी। आसौज वदी 15 को सुसमाधिपूर्वक उन्होंने स्वर्गारोहण किया। आपकी प्रवचन शैली के सम्बन्ध में क्या लिखूं ? श्रोता अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाते। विशाल जनसमुदाय के समक्ष जिस निर्भीकता से आप आगम का क्रमबद्ध, धारा प्रवाह प्रतिपादन करती हैं तो लगता है साक्षात् सरस्वती के मुख से अमृत झर रहा है। आपके प्रवचन आगमानुकूल अकाट्य तर्कों के साथ प्रवाहित होते हैं। समझने के लिये व्यावहारिक उदाहरणों का भी आप ग्रहण करती हैं। चार-चार, पाँच-पाँच घण्टे एक ही आसन से धर्मचर्चा में निरत रहती हैं। उच्च कोटि के विद्वान् भी अपनी शंकाओं को आपसे समीचीन समाधान पाकर सन्तुष्ट होते हैं। सबसे बड़ी विशेषता तो आप में यह है कि आपसे कोई कितने ही प्रश्न कितनी ही बार करें आप उसका बराबर सही प्रामाणिक उत्तर देती हैं। और प्रश्नकर्ता को सन्तुष्ट करती हैं आपके चेहरे पर खीज या क्रोध के चिह्न कभी दृष्टिगत नहीं होते। अब तक के जीवनकाल में आपके असाता कर्म का उदय विशेष रहा है। स्वास्थ्य अधिकतर प्रतिकूल ही रहता है, परन्तु आप कभी अपनी चर्या में शिथिलता नहीं आने देतीं। कई वर्षों से अलसर की बीमारी लगी हुई है, कभी-कभी रोग का प्रकोप भयंकर बढ़ जाता है, फिर भी आप हमेशा विचलित नहीं होती। णमोकार मन्त्र के जाप्य, स्मरण में आपको प्रगाढ़ आस्था है और आप हमेशा यही कहती हैं, कि इसके प्रभाव से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाता है। आसाम, बंगाल, बिहार, नागालैंड आदि प्रान्तों में अपूर्व धर्मप्रभावना कर जैनधर्म का उद्योत करने का श्रेय आपको ही है। महान् विद्यानुरागी, श्रेष्ठवक्ता; अनेक भाषाओं की ज्ञाता चतुरनुयोगमय जैन ग्रंथों की प्रकाण्ड विदुषी, न्याय, व्याकरण, सिद्धान्त साहित्य की कर्मज्ञा, ज्योतिष, यन्त्र, तन्त्र, मन्त्र, औषधि आदि की विशेष जानकार होने से आपने अनेकों जीवों का कल्याण किया है। और आज भी कठोर साधना में लीन होते हुए स्वपर कल्याण में रत हैं।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

जैसे रसों में इक्षुरस और नदियों में गंगा श्रेष्ठ है, वैसे ही कन्याओं में मैना श्रेष्ठ थी। जैसे पुष्पों में कमल और सुगंधित पदार्थों में चन्दन श्रेष्ठ है, वैसे ही क्षुल्लिकाओं में वीरमती श्रेष्ठ थीं। जैसे ताराओं में चन्द्रमा और वनों में नन्दनवन श्रेष्ठ है, वैसे ही ज्ञान और शील में आर्यिका ज्ञानमती श्रेष्ठ हैं। एक ही असाधारण व्यक्तित्व की मैना से वीरमती और वीरमती से ज्ञानमती तक की यह आध्यात्मिक यात्रा 20वीं-21वीं सदी के इतिहास की एक उल्लेख्य घटना है। उनकी चर्चा और चर्या को देख-सुनकर कौन मुग्ध नहीं होता है! आचार्य श्री हेमचन्द्र ने ठीक ही लिखा है-'जिस किसी समय में, जिस किसी रूप में, जो कोई जिस किसी नाम से प्रसिद्ध हो, यदि वह वीतराग पथ का पथिक है, तो वह त्रिकाल वंदनीय है।' जातक या जन्मकुण्डली के आधार पर पूज्य माताजी से आयु में हम भले ही छह माह बड़े हैं, किन्तु त्याग-तप-साधना और ज्ञान-सम्पादन में वह हमसे कितनी ज्येष्ठ और श्रेष्ठ हैं, इसे समय के पैमाने से नापना संभव नहीं है। उनकी प्रशस्त प्रेरणा से आयोजित धार्मिक प्रशिक्षण-शिविरों में सम्मिलित होकर अन्य अनेक विद्वानों की भाँति ही हमें भी जैन तत्त्वविद्या के पारायण की प्रेरणा मिलती रही है। वह जगत् की

धर्मगुरु तो हैं ही, हमारी तो विद्यागुरु भी हैं।

अवध प्रान्त के टिकैतनगर कस्बे में दिनाँक 22 अक्टूबर 1934 को सुश्रावक श्री छोटेलाल जी के घर में एक कन्यारत्न ने जन्म लिया। रात्रि में सवा नौ बजे जिस समय उसने अपनी आँखें खोलीं, उस समय निरभ्र आकाश पर पूनों का चाँद अपनी निर्मल ज्योत्स्ना बिखेर रहा था। वह वि.सं. 1991 की शरदपूर्णिमा की रात्रि थी । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नवजात शिशु के भावी विकास में ग्रह, नक्षत्र, तिथि आदि का भी भारी प्रभाव पड़ना माना गया है । यों तो हर माह की पूर्णिमा को चन्द्रमा अपनी सोलह कलाओं के साथ खिलता ही है, किन्तु शरदपूर्णिमा की तो बात ही कुछ निराली है। गाँवों में आज भी यह माना जाता है कि शरदपूनों की चाँदनी में यदि घी-बूरा मिलाकर रख दिया जाये और उसका अल्प मात्रा में रोज सेवन किया जाये तो आँखों की रोशनी बढ़ जाती है। नेत्र-ज्योति को सुरक्षित बनाए रखने के लिए आज भी महिलाएँ चाँदनी रात में सुई में धागा पिरोने का अभ्यास करती हुई देखी जाती हैं। यह शरदपूर्णिमा यदि इस रात्रि में जन्मे नवजात शिशु के ज्ञाननेत्रोन्मीलन में निमित्त बन जाए तो इसमें आश्चर्य कैसा! शरदपूर्णिमा भारतीय संस्कृति में पर्व के रूप में मान्य है। इस दिन धर्मनिष्ठ लोग व्रत रखते हैं। पूर्णिमा का चाँद उजास (प्रकाश) का प्रतीक है। प्रकाश तो सूर्य में भी होता है, पर उसमें प्रखरता होती है। पूर्ण चन्द्र का प्रकाश शीतल होता है। इस दिन जन्मी इस बालिका को जब पूनों की चाँदनी ने नहलाया, तो इसके पीछे यही संकेत छिपा था कि यह बालिका बड़ी होकर सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी और स्वयं महाव्रत अंगीकार कर सबको सुख-शीतलता प्रदान करेगी। अपनी प्रथम सन्तान के रूप में इस कन्या को जन्म देकर माता मोहिनीदेवी का मातृत्व गौरवान्वित हो गया। भारत में अधिकांश लोग बेटे के जन्म पर खुशियाँ और बेटी के जन्म पर मातम मनाते हैं। यह खोटी परिपाटी कब से और क्यों चल पड़ी, यह तो भगवान जाने, परन्तु इस बेटी ने अपनी बालसुलभ किलकारियों और सस्मित मुख-छवि से अपने घर-आँगन में खुशियों की जो चाँदनी बिखेरी, तो बेटों पर गर्व करने वाले भी ठगे से रह गये। इस परिवार में बेटे-बेटियों के साथ कभी भेदभाव नहीं किया गया। पूर्णमासी का चाँद भी शायद यही कहने आता है कि वह चाँदनी का अवदान देने में जिस तरह किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार बेटा या बेटी के लालन-पालन में भी किसी को कभी कोई भेदभाव नहीं करना चाहिए। समय की सुई अविराम गति से घूम रही थी। उसने मोहिनीदेवी की इस लाड़ली को बढ़ने का अवसर दिया। जब भी कोई शिशु जन्म लेता है, वह धरती पर अनाम ही आता है। जीव तो सूक्ष्म है, उसे पहचाना नहीं जा सकता। किसी मनीषी ने कहा है-'नवजात की पहचान के दो माध्यम हैं-रूप और नाम। रूप तो वह अव्यक्त जगत् से लेकर आता है और नाम व्यक्त जगत् में आने पर आरोपित किया जाता है।' कुछ दिन बीतने पर कन्या के घरवालों ने भी इसकी पहचान के लिए शुभ मुहूर्त में इसका नामकरण संस्कार किया। नाम रखा गया-मैना। नाम मेंभी कुछ अव्यक्त संकेत छिपे होते हैं। कोई दूज को जन्म ले तो उसका नाम 'दौजी' रख देते हैं। किसी कल्याणक तिथि पर जन्मे बालक का नाम संबंधित तीर्थंकर के नाम पर रख दिया जाता है। भगवान महावीर के प्रचलित पाँचों नामों के पीछे भी कुछ संकेत निहित हैं। मैना पक्षी के समान मधुर वाणी के कारण ही इस कन्या का नाम मैना रखा गया होगा। 'मैना' नाम के पीछे कुछ आध्यात्मिक संकेत भी छिपे थे, अब हमें ऐसा लगता है। 'मैना' नाम 'मै' और 'ना' इन दो शब्दों से बना है। 'मै' का अर्थ है-अहंकार और ममकार। आत्म विकास में ये दोनों बाधक हैं। एक सन्त एवं एक जिज्ञासु के बीच हुआ वार्तालाप याद आ रहा है- सन्त-'आर्य! तुमने सर्प की केंचुली को देखा है?' जिज्ञासु-'हाँ, देखा है।' सन्त-'केंचुली से क्या होता है?' जिज्ञासु-'केंचुली आने पर सर्प अंधा हो जाता है।' सन्त-'केंचुली के छूट जाने पर क्या होता है?' जिज्ञासु-'वह देखने लग जाता है।' सन्त ने उस जिज्ञासु को समझाया कि अहंकार और ममकार भी केंचुली के समान है। इनके रहते हुए मनुष्य अंधा हो जाता है, वह आत्मदर्शन नहीं कर सकता। 'मैना' का व्युत्पत्तिपरक अर्थ भी यही है कि जिसमें अहंकार और ममकार न हो, उसे कहते हैं-मैना। आज आयु के 80वें पायदान पर खड़ी मैना (सम्प्रति गणिनी आर्यिका ज्ञानमती) ने अपने बचपन के नाम की सार्थकता सिद्ध कर दी है । बचपन से पचपन तक माताजी का यही चिन्तन चलता रहा है-'अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम' अर्थात् मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, जो कुछ हो सो तुम्ही हो। मैं तो तुम्हारी शरण में हूँ।

मैना बचपन से ही सौम्य, सुकुमार और शालीन तो थी ही, भव्यत्व भाव भी पूर्व जन्म के संस्कारों के प्रभाव से अपने साथ लेकर आई थी। यह भव्यत्व भाव उसी में प्रकट होता है, जिसमें ज्ञान की प्यास, सत्य-शोध की मनोवृत्ति, आत्मोपलब्धि का प्रयत्न और आन्तरिक अनुभूति की तड़प पाई जाती है। मैना में ये चारों ही गुण जन्म से ही शनैः-शनैः विकसित होते हुए देखे जा रहे थे। मैना के मन में हितकर वार्ता को सीखने और समझने की उत्कट ललक थी। उसका क्षयोपशम भी प्रबल था। जिस चर्चा को कई-कई बार पढ़-सुनकर भी अन्य समवयस्क आत्मसात नहीं कर पाते थे, उसे वह एक-दो बार पढ़कर ही हृदयंगम कर लेती थी। अकलंक-निकलंक जैसा भाग्य पाया था उसने। वह कहती भी है-'कई एक ग्रंथों को पढ़ते समय मुझे ऐसा लगता था कि मानों उसे मैंने पहले कभी पढ़ा है।' मन की निर्मलता के लिए अध्ययन और मनन की ऐसी प्यास उतनी ही आवश्यक है, जितनी शरीर के स्वास्थ्य के लिए भोजन और व्यायाम की। हमें यह तो ज्ञात नहीं है कि मैना की स्कूली शिक्षा किस स्तर तक हुई, किन्तु अपने अनुभव से हम यह कह सकते हैं कि भवितव्यता अच्छी हो, पूर्वजन्मार्जित पुण्य का उदय और स्वाध्याय की लगन हो, तो स्कूल में प्रवेश पाए बिना भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मैना प्रारंभ से ही प्रतिभा-सम्पन्न थी। बौद्धिक ज्ञानशक्ति की अपेक्षा उसकी अतीन्द्रिय ज्ञानशक्ति तीव्र थी। बौद्धिक ज्ञान से बड़ी-बड़ी उपाधियाँ, पद-पैसा-प्रभुत्व और मान-सम्मान तो मिल सकता है, किन्तु आत्म-वैभव नहीं। जिसकी आन्तरिक चेतना जाग्रत होती है, वही सत्यार्थ का प्रकाश प्राप्त कर अपने मोह, राग-द्वेष आदि से छुटकारा पा सकता है। जिससे आत्मा विशुद्ध हो, वही सच्चा ज्ञान है। मैना के ज्ञानार्जन की दिशा द्विमुखी थी, वह स्व-पर प्रकाशक थी। पर को जानकर स्व में लीन होते जाने की प्रवृत्ति ने ही मैना से ज्ञानमती होने तक का मार्ग प्रशस्त किया, यह मानने में संदेह के लिए कोई अवकाश नहीं है। शास्त्रों में ज्ञानी को सम्बुद्ध भी कहा गया है और उसकी तीन कोटियाँ बताई गई हैं-(1) स्वयंबुद्ध-जो बिना किसी गुरु के स्वतः ज्ञान प्राप्त करता है (2) प्रत्येक बुद्ध-जो किसी निमित्त से ज्ञान प्राप्त करता है तथा (3) उपदेशबुद्ध-जो दूसरों के उपदेश से ज्ञान प्राप्त करता है। स्वयंबुद्ध तो तीर्थंकर होते हैं एवं शेष ज्ञानी दूसरी और तीसरी कोटि में गणनीय हैं। ज्ञान तो आत्मा की ज्योति है, वह भीतर से प्रकट होती है। विद्या बाहर की विभूति है, उसे अर्जित किया जाता है। ज्ञान उपादान है और उसकी जागृति में पारिवारिक वातावरण, गुरु, पुस्तक आदि निमित्त हैं। मैना या माताजी का उपादान जाग्रत था, इसलिए अनुकूल निमित्त पाकर और उपदेश सुनकर उनका ज्ञान निरन्तर वृद्धिंगत होता रहा। जिस प्रकार योग्य पाषाण-खण्ड में मूर्ति तो पहले से ही विद्यमान रहती है, एक कुशल कारीगर व्यर्थ के (फालतू) पाषाण-कणों को अपनी पैनी छैनी से काट-छाँटकर अलग कर देता है और मूर्ति प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार मैना की उपादान शक्ति में ज्ञान तो पहले से ही मौजूद था, निमित्त-शिल्पी ने क्षयोपशम की छैनी का अवलम्ब पाकर अवरोधक कर्म को पृथक् कर दिया और ज्ञान के बंद स्रोत खुलते चले गये।

मैना के ज्ञान का विकास उसकी स्वतःस्फूर्त प्रेरणा का परिणाम है। प्रारंभिक शिक्षा यद्यपि उसने किसी धार्मिक पाठशाला में प्राप्त की थी, किन्तु वह युग स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा का युग था। उस समय के अभिभावकों की अपनी-अपनी कन्याओं को अधिक पढ़ाने में विशेष रुचि नहीं थी। कस्बे की अन्य कन्याओं की तरह मैना को भी आगे पढ़ाई जारी रखने से रोक लिया गया, किन्तु मनस्वी मैना को किसी वैशाखी की जरूरत ही कहाँ थी! उसने घर पर ही पढ़ना जारी रखा। कभी सीता और राजुल के बारहमासा पढ़ती तो कभी बारहभावना, वैराग्य भावना, ज्ञानपचीसी और स्तुतियाँ आदि। घर में रहते हुए जब गेहूँ-चावल बीनती-शोधती या अन्य काम कर रही होती, तो पाठ भी याद करती रहती। जिसके मन में पढ़ने की ऐसी धुन सवार हो, उसे सम्बुद्ध बनने से रोकने की शक्ति किसमें हैं?

आठ वर्ष की उम्र से ही मैना अपनी माँ के साथ नियमित रूप से मंदिर जाने लगी थी। वहाँ बैठकर अन्य लड़कियाँ जहाँ गपशप में लीन रहतीं, वहाँ मैना मनोयोग से शास्त्र-चर्चा सुनती। उसके ज्ञानवर्धन में शास्त्र-श्रवण भी एक बलवान निमित्त रहा। जब मैना ने दीक्षा ग्रहण कर ली, तो उन्हें पूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज, आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज एवं आचार्यश्री वीरसागर महाराज के उपदेश श्रवण और तत्त्वचर्चा का सौभाग्य मिलने लगा। वहाँ यथावसर वह स्वयं भी पढ़ती और गुरु-आज्ञा से संघस्थ सभी साधुओं और आर्यिकाओं को भी पढ़ाती। प्रत्युत्पन्नमति और अभीक्ष्णज्ञान-साधक तो वह वह थी ही, स्वयं पढ़ने और दूसरों को पढ़ाते रहने से उसकी मति पैनी होती गई। ज्यों-ज्यों ज्ञान का व्यय करते हैं, त्यों-त्यों ज्ञान बढ़ता है। धीरे-धीरे चारों ही अनुयोगों के सभी उच्च कोटि के सिद्धान्त एवं आगम ग्रंथों का तलस्पर्शी पाण्डित्य उसने प्राप्त कर लिया। आज वह वैदुष्य के जिस शिखर पर बैठी है, वहाँ तक पहुँचने में हम जैसे छद्मस्थों और 'पण्डित' नामधारियों को अभी कई जन्म लेने पड़ सकते हैं।

पूज्य माताजी इस युग की ज्ञान-कल्पतरु हैं, यह बात तो वे भी खुले दिल से स्वीकार करते हैं, जो कुछ प्रसंगों पर उनसे असहमति रखते हैं। असहमति या मतभेदों का होना तो बाप-बेटों में भी संभव है, किन्तु मनभेद नहीं होना चाहिए। मनभेद से विवाद और विवाद से विरोध उत्पन्न होते है। समय की माँग यह है कि हम विवादों को मिटाकर संवाद उत्पन्न करें। बीसपंथ, कुण्डलपुर या चर्यासंबंधी कुछ प्रसंग ऐसे नहीं हैं, जिन्हें लेकर मन में कषाय की गाँठ बाँध ली जाये। कषाय हेय है, उससे बचना चाहिए। कोई किसी से नाराज भी हो तो भी उसे तब तक छोटी-छोटी बातों को तूल नहीं देना चाहिए, जब तक कोई उसके रास्ते के बीच में नहीं आता हो। किसी नीतिज्ञ ने कहा है कि तुम्हें अपनी चिलम सुलगानी हो तो सुलगाओ, तुम्हें रोक कौन रहा है परन्तु अपनी चिलम सुलगाने के लिए दूसरों की झोंपड़ी तो मत जलाओ। विरोध और विवाद की स्थिति में तर्वâबुद्धि मुखर हो उठती है, किन्तु हर जगह तर्व और शंका की उँगली पकड़कर चलने से तो आदमी नास्तिक बन जाता है। ज्ञान-कल्पतरु की छाया में बैठकर यही तो सीखने की बात है कि विरोध में भी विनोद की बेल मुरझाने न पाए। एक ज्ञानी व्यक्ति से दूसरा ज्ञानी व्यक्ति ईष्या करता था, बार-बार वह पहले व्यक्ति से विवाद करने लगता, कभी-कभी खूब खरी-खोटी सुनाता। एक सन्त ने उसे बुलाकर समझाया-

मनुष्य सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। उसकी श्रेष्ठता तन से नहीं, मन से आँकी जाती है। तन की अपेक्षा तो पशु उससे श्रेष्ठ हैं। वृषभस्कन्ध, गृद्धदृष्टि, सिंहनाद, अश्वगति जैसे शब्दों से तो यही आभास होता है। मनुष्य की विशेषता उसके विकसित मन और मस्तिष्क की वजह से है। मनीषियों ने उसे 'हिरण्यमय कोष' इसीलिए तो कहा है। विकसित मन-मस्तिष्क में छिपी रहती है एक चिन्तनशील चेतना, जो अन्य प्राणियों में नहीं पाई जाती। चिड़ियाँ दाना चुगकर अपना पेट तो भर लेती हैं, किन्तु रोटी बनाना नहीं सीख पातीं। बन्दर पेड़ों की डालियों को पकड़कर उछलना-कूदना और लटकना तो जानता है, पर अपने रहने के लिए छोटा-सा घर बनाना नहीं सीख पाता। पशुओं के सामने कोई लक्ष्य या उद्देश्य नहीं रहता, किन्तु मनुष्य की हर योजना सुविचारित होती है। 'ज्ञानोहितेषामधिको विशेषः' वाली बात है। पूज्य माताजी की आर्यिका दीक्षा की स्वर्ण जयंती के पावन अवसर पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपनी विवेक-शक्ति को सतत जागृत रखें। विवेक जीवन को प्रकाश से भर देता है। सारी अच्छाइयाँ ही जीवन का प्रकाश है।

परमपूज्य आर्यिका श्री जिनमती माताजी

यदि कल्याण की इच्छा है तो विषयों को विष के समान त्याग देना चाहिए। क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्य को अमृत के समान ग्रहण करना चाहिए। इस तथ्य का बोध महाराष्ट्र प्रान्त की एक बाला को हुआ और वह आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के उपवन का एक सुरभित पुष्प बन गई। कु. प्रभावती का जन्म वि. सं. 1990 (सन् 1933) फाल्गुन शु. 15 के दिन म्हसवड़ (महा.) में हुआ था, इनके पिता का नाम श्री फूलचंद जैन एवं माता का नाम श्रीमती कस्तूरी देवी था। जैनधर्म के कर्मसिद्धान्तानुसार बालिका प्रभावती के दुर्भाग्य से पितृ एवं मातृ वियोग उन्हें बचपन में ही हो गया अतः उनका लालन-पालन मामाजी के घर पर हुआ था। सन् 1955 की बात है, उस समय पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, क्षु. वीरमती माताजी के रूप में थीं और चारित्र चक्रवर्ती आचार्यवर्य श्री शांतिसागर जी महाराज के सल्लेखना के समय आचार्य श्री के दर्शनार्थ क्षु. विशालमती माताजी के साथ दक्षिण भारत में विहार कर रही थीं, उन्होंने म्हसवड़ में चातुर्मास किया। उस चातुर्मास के मध्य अनेक बालिकाएँ पूज्य माताजी से कातंत्र व्याकरण, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रंथों का अध्ययन कर रही थीं और उन्हीं बालिकाओं में वह 22 वर्षीया बालिका कु. प्रभावती भी थी। माताजी ने उसके मनोभावों को जानकर अपने वात्सल्य के प्रभाव से कु. प्रभावती को त्यागमार्ग के प्रति आकर्षित किया और सन् 1955 की दीपावली की पावन तिथि में वीरप्रभु के निर्वाणदिवस पर उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य एवं 10वीं प्रतिमा का व्रत दे दिया। वास्तव में गुरु का सानिध्य एवं वात्सल्य जीवन को मात्र सुवासित ही नहीं करता अपितु उसे परमपूज्य भी बना देता है।

जैन धर्म में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का संदेश

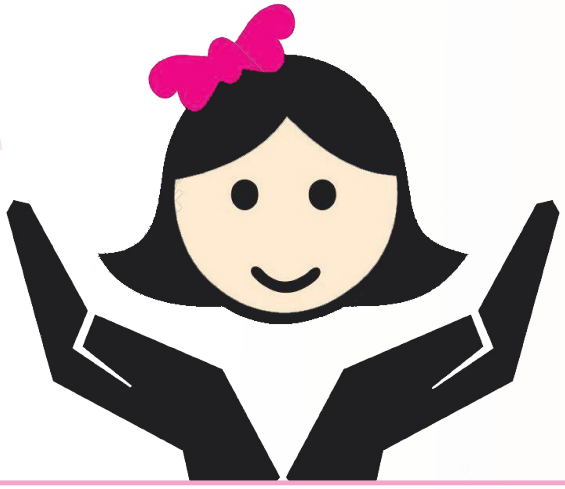

यदि कन्या शिक्षित है तो वह जिस घर में ब्याह कर जाती है उस घर को स्वर्ग बना देती है और अपने व्यवहार से दोनों कुलों की अर्थात् पीहर तथा ससुराल दोनो का नाम रोशन करती हैं। जब तक वह पिता के घर में है अपनी मां अथवा दादी के द्वारा दी गई संस्कारों की छुट्टी से बड़ो को आदर देने वाली एवं छोटों को प्यार देने वाली होती है। शिक्षित कन्या ही ससुराल में जाकर अपने सास-ससुर का आदर कर सकती है अपने पति की सहचरी बनकर उसके हर कदम पर उसका साथ देती है।

जैन धर्म के सिद्धांतों को अंगीकार करने वाली महिलाएँ आज के युग में दुराचार से दूर रहकर चहुँमुखी प्रगति कर सकती है। धर्म के सिद्धांतों, सद् गुणों, स्वभावों तथा स्वकर्तव्यों का पालन करने से जीवन सदा विकसित होगा। जैन धर्म में महिलाओं को शिक्षित, संस्कारित करने पर सबसे ज्यादा बल दिया गया है।

हमें सती व महान नारियों से यह शिक्षा लेनी चाहिए कि विकट परिस्थितियों में अपने धर्म के पथ से हिलना नहीं चाहिए, अडिग रहकर सदाचार की बिजली चमकानी चाहिए। संसार की समस्त शक्तियाँ, ब्रह्मचर्य की विराट साधना के सामने नतमस्तक होती है। ब्रह्मचर्य के महान तेज के बल पर कुरुक्षेत्र में महाभारत के वीर नायक भीष्म पितामह अपनी प्रतिज्ञा पर प्रतिबद्ध रहे। देवराज इन्द्र भी उनके चरणों में नमस्कार करते हैं। भारतवर्ष की मूल पूँजी चरित्र-निर्माण है। भारत में बड़े-बड़े संतों, ऋषि-मुनियों, तत्वेत्ताओं और दार्शनिकों ने सर्वाधिक चरित्र निर्माण पर बल दिया है।

आधुनिक युग प्रतिस्पर्धा का युग है। प्रत्येक नर-नारी अपने समुचित जीवन विकास हेतु भरसक प्रयत्नशीन करते हैं। नारी भी कंधे-से-कंधे मिलाकर अपने जीवन-साथी की कामयाबी के लिए स्वयं नौकरी करती हैं। कई बार उन्हें अपना सफर अकेले भी तय करना होता है। इसलिए ऑफिस, बस अथवा सुनसान स्थानों पर महिलाओं के साथ हो रहे दुष्कर्मों से बचने के लिए उन्हें सचेत सावधान रहना चाहिए। उन्हें जैन धर्म की पगडंडी पर कदम रखते हुए मानवीय कुविचारों से सर्वदा दूर रहना चाहिए। प्रलोभन (लालच) के बहकावे में न आकर किसी पर पुरुष के प्रति आकृष्ट होने के कुविचारों पर संयमित होना चाहिए। जैन नारी को मानवीय मूल्यों को अपनाना चाहिए। महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित होने का प्रयास करना चाहिए।

बालिकाओं को अपने शीलव्रत का दृष्टव्य देने के लिए सती अंजना, सती सोमा, सती सीता जैसी महान नारियों की मूर्ति को अपने मन मंदिर में बनाए रखना चाहिए। अपना दृष्टिकोण हमेशा सुंदर, मधुर तथा उपादेय रखकर जीवन को सत्यं, शिवं और सुंदरम् की ओर ले जाना चाहिए। नारी में मानवता, सहानुभूति और आंतरिक सौंदर्य होना चाहिए जिसके बल पर अनैतिक आचरण को होने से रोक सकती है। जैन धर्म श्रद्धा, विवेक की पतवार से जीवन सँवारकर निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होकर मानव जीवन कल्यापणमय बनती है। यर्थाथ यह है कि नदी जैसे दोनों तटों के मध्य में संतुलित होकर प्रवाहमान रहने से ही अनेक प्राणियों के लिए, जीवनदायी बन सकता है। वैसे ही मनुष्य की जीवन सरिता तादात्मय और ताटस्थ इन दोनों तटों के मध्य रहकर जीवन वीणा की शब्द लहरियों से झंकृत हो जाती है।

प्रत्येक नारी को अपना जीवन धर्म संस्कारों के साए में बिताना चाहिए जिससे स्वयं आत्मकल्याण के मार्ग पर चलकर दूसरों को भी राह दिखा सके। आज की बालिका, कल का भावी परिवार है अतः वे स्वयं धार्मिक सुरक्षित होकर अपने परिवार को दिशावान तथा संस्कारवान बनाकर संपूर्ण समाज, देश का नाम उन्नत करने में पूर्ण सफल होगी। भारत को नई ऊँचाइयों पर ले जाकर इसके गौरव को अक्षुण्णं रखेगी। इसके लिए उनका शिक्षित होना बहुत जरूरी है। कन्या जन्म पर दुख मनाने वाले परिवार अब जैनों में नहीं है। जैन परिवारों में तो कन्या जन्म पर हर्ष का विषय होता है।

वास्तव में जो महिलाएं सुशिक्षित हैं वे अपनी संतान को सुयोग्य साँचे में ढाल सकती हैं क्योंकि माताओं की गोद ही बच्चों के लिए प्रारंभिक पाठशाला है। माताएं बच्चों को प्रारंभ से ही लाड़ प्यार के साथ धर्म की घूंटी पिला-पिलाकर सुसंस्कारों से हृष्ट-पुष्ट बना सकती हैं। जब बच्चे कुछ समझने और बोलने लग जायें तब उन्हें महामंत्र सिखाना, अच्छे-अच्छे धार्मिक भजनों की पंक्तियाँ रटाना, जैसे-तैसे वे 3-4 वर्ष के होते जायें उन्हें छोटी-छोटी शिक्षास्पद कथाएं सुनाना, धार्मिक पाठशालाओं में कुछ न कुछ धर्म शिक्षा दिलाते रहना ही बच्चों को सुसंस्कारित करना है। किशोरावस्था में उन्हें कुसंगति से बचाना, मंदिरों में जाने की प्रेरणा देते रहना, गुरुओं के पास ले जाना, तीर्थयात्राओं की वंदना कराते रहना उनके जीवन में सद्विचारों के बीजारोपण करना है। खासकर ग्रीष्मावकाश में बालक-बालिकाओं को गुरुओं के पास धर्म शिक्षा दिलाना, धार्मिक पढ़ाई में शिक्षण शिविरों में भाग दिलाना, छुट्टी के दिनों का बहुत बड़ा सदुपयोग है। युवकों को धर्मकथाओं के माध्यम से चारित्रवान बनाना चाहिए। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र, जम्बू कुमार, अकलंक-निकलंक आदि महापुरुषों के आदर्श बालकों के समक्ष पुनः-पुनः कहते रहने से उनमें वैसे बनने के संस्कार सहज ही हो सकते हैं।

आज भी चन्दनबाला अनंतमती जैसी कन्याएं हैं। सीता, मैना, मनोरमा जैसी पतिव्रता हैं, चेलना जैसी कर्तव्यपरायण हैं और ब्राह्मी-सुन्दरी के पदचिन्हों पर चलने वाली आर्यिकाएं हैं। हमारी बहनों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। प्रतिवर्ष एक माह नहीं तो कम से कम एक सप्ताह उनके सानिध्य में जाकर उनसे कुछ सीखना चाहिए और स्त्री समाज में बढ़ती हुई दहेज प्रथा, सहशिक्षा आदि कुरीतियों को दूर करने में अपने समय को, शक्ति को और धन को लगाना चाहिए, यही महिलाओं का कर्तव्य है।

यदि कन्या शिक्षित है तो वह जिस घर में ब्याह कर जाती है उस घर को स्वर्ग बना देती है और अपने व्यवहार से दोनों कुलों की अर्थात् पीहर तथा ससुराल दोनो का नाम रोशन करती हैं। जब तक वह पिता के घर में है अपनी मां अथवा दादी के द्वारा दी गई संस्कारों की छुट्टी से बड़ो को आदर देने वाली एवं छोटों को प्यार देने वाली होती है। शिक्षित कन्या ही ससुराल में जाकर अपने सास-ससुर का आदर कर सकती है अपने पति की सहचरी बनकर उसके हर कदम पर उसका साथ देती है। चाहे सुख हो या दुःख हो वह अक्षरा (ये रिश्ता क्या कहलाता है) के समान अपने ससुराल वालों को साथ और पति को हिम्मत बांधने वाली होती है। आवश्यकता पढ़ने पर साहस का परिचय देकर परिवार का गौरव बढ़ाती है। और इस तरह वह दोनों कुल की लाज निभाती है। बदलती हुई परिस्थितियों में, भौतिकतावादी संस्कृति के प्रति आकर्षण बढा है जिससे धर्म के स्थान पर धन का महत्व बढ़ा है इतना ही नहीं स्वतंत्रता के मायने बदले हैं तथा उच्छृंखलता के दृश्य समाज को शर्मिंदा कर रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव ने नारी सुलभ शालीनता को कठघरे में खड़ा कर दिया है। अनैतिकता के परिदृष्यों से समाज का विकृत स्वरूप सामने आ रहा है कहने का तात्पर्य यह कि जिस मर्यादित, सुसंस्कृत समाज की हमारे पूर्वजों ने कल्पना करके रीति

नीति निर्धारण कर सामाजिक मानदण्ड स्थापित किये थे आज उन मानदण्डों की उपेक्षा ही नहीं बल्कि उन्हें रूढ़िवादिता कहकर नकारा जाने लगा है। परिवारों में बहू-बेटियों के बढ़ते अहंकार के चलते पारिवारिक प्रतिमान टूटते जा रहे हैं, स्वार्थ परता की भावना युवा पीढ़ी के हृदय में स्थान बनाने लगी है इस कारण उनकी नजरों में परिवार का महत्व घटने लगा है। बुजुर्गों की स्थिति दयनीय हो रही है। हमारा दायित्व है कि हम इस युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा के साथ मर्यादा और संस्कार का पाठ पढ़ायें परिवार, धर्म तथा जाति का महत्व समझायें, आज की बेटी कल का भविष्य है और यदि हमें अपना भविष्य सुरक्षित करना है तो अपनी बेटियों को दहेज के रूप में संस्कारों की पोटली थमाना होगी। तभी निम्न पंक्तियां सार्थक हो सकेगी।

संसार की सृष्टि में स्त्री और पुरुष दो अंग हैं, जैसे-कुम्भकार के बिना चाक से बर्तन नहीं बन सकते अथवा कृषक के बिना पृथ्वी से धान्य की फसल नहीं हो सकती उसी प्रकार स्त्री पुरुष दोनों के संयोग के बिना सृष्टि की परंपरा नहीं चल सकती। आज जब घर में कन्या का जन्म होता है तब घर वाले ही क्या अड़ोस-पड़ोस के लोग भी यही सोचने लगते हैं कि यह क्या बला आ गई ? उसका मूल कारण है दहेज, इस दहेज प्रथा ने कितने अनर्थों को जन्म दिया है, सब प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। एक समय था जब कन्या को सबसे श्रेष्ठरत्न और उनके माता-पिता को सबसे श्रेष्ठ रत्नाकर माना जाता था। जैन धर्म में लड़का और लड़की में कोई भेद नहीं है।

वास्तव में जहां एक कन्या के स्वयंवर के समय करोड़ों राजा महाराजा आकर उपस्थित होते थे और सबके मन में यही आशा रहती थी कि यह कन्या मेरे गले में वरमाला डाले। इस विषय में सुलोचना, सीता, द्रौपदी आदि के प्रत्यक्ष उदाहरण आबाल-गोपाल प्रसिद्ध ही हैं लेकिन आज सर्वथा उसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है। कन्याओं के जन्म को हीन दृष्टि से देखने का मूल कारण जो दहेज है, उसका कैसे निर्मूलन किया जाए ? इस पर महिलाओं को सक्रिय कदम उठाना चाहिए। महिलाएँ ही महापुरुषों की जननी हैं, तीर्थंकर जैसे नर रत्नों को भी जन्म देने का सौभाग्य महिलाओं ने ही प्राप्त किया है। यही कारण है कि महामुनियों ने भी उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा है।

जैन धर्म की पताका फहराती प्रमुख जैन नारियां

डॉ. ज्योति जैन, खतौली

विश्व जननी 'नारी' सृष्टि के विकास का मूल आधार है। नारी परिवार समाज एवं राष्ट्र की धुरी है। नारी अपनी प्रकृति प्रदत्त विषेषताओं के कारण समाज को गतिशील बनाने में सक्षम है। जैन धर्म एवं संस्कृति में नारी का उच्च स्थान रहा है। वह तीर्थंकरों की जननी है। वह माता, पत्नी, बहिन, पुत्री के रूप में समाज में अपना सम्माननीय स्थान पाती है। जैन धर्म में धार्मिक आधार पर पुत्र-पुत्री में कोई भेदभाव नहीं है। धार्मिक अनुष्ठानों एवं आयोजनों में नारियों की सहभागिता सदैव रहती है। धार्मिक पुराणों एवं चरित्रों में नारी की गौरवगाथा कही गयी है।

धर्म के प्रति नारी की अगाध श्रद्धा उसे सहधर्मिणी बनाती है। वह अपने घर और परिवार को संस्कारित कर गृहस्थ जीवन का निर्वाह करती है। नारी का स्वस्थ्य और सकारात्मक चिंतन उसे विवेकपूर्ण कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। उसका षिक्षित होना उसके व्यक्तित्व का विकास करता है। अपने कर्तव्यों का पालन कर वह संपूर्ण परिवार के सदस्यों को अपना बनाने की क्षमता रखती है। इतिहास गवाह है कि नारी ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। वह एक सुखद परिवार, स्वस्थ्य समाज और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करने में अपना योगदान देती है।

जैन पौराणिक ग्रंथों में नारियों की अनन्त महिमा का वर्णन किया गया है। आदिपुराण में कहा गया है कि 'कन्या रत्नात् परं नान्दय' कन्यारत्न से बढ़कर कोई रत्न नहीं है। नारी की महत्ता उसके नारीत्व गुणों से है। श्रेष्ठ महापुरुषों को जन्म देने वाली माता लोक में पूजनीय है। शीलवती स्त्रियों को देवों के द्वारा सम्मान प्राप्त है। प्राचीन शिलालेखों में नारियों की गौरवगाथा उत्कीर्ण है। जैन पुराणों और चरित्रों में जैन नारियों के अद्भुत पराक्रम, असीम सेवा, धर्म परायणता और त्याग संयम के कथानक चकित कर देते हैं।

नारी का प्रेम मात्र पति की बपौती न बनकर परिवार, समाज और राष्ट्र की सीमा को प्रभावित करता है। धर्म नारी के जीवन का आधार है। धार्मिक

जैनधर्म एवं संस्कृति की यह परम्परा सतत रूप से चली आ रही है। महिला रत्न मगनबाई, कुकुंलाई, मां श्री चंदाबाई, पद्मश्री सुमतिबाई, कमला बाई, चिरौंजाबाई, बानुबाई, रमा रानी आदि अनेक नारियां जैन धर्म ध्वजा की पथगामिनी बनीं।

अनुष्ठानों, पर्वों, आयोजनों में नारी की उपस्थिति उसकी धर्म के प्रति अगाढ़ श्रद्धा को दर्शाती है। नारी स्त्रियोचित मर्यादा में रहकर धर्म संस्कृति एवं गृहस्थ जीवन को फलीभूत करती है। वह पति को न्यायपूर्वक धन कमाने को प्रेरित करना, विषयभोगों में संयम अपनाकर अपने जीवन केा संयमित बनाना, नियमित स्वाध्याय के माध्यम से पांच पापों का त्याग, जीव दया करना, पानी छानकर पीना, देव दर्षन, रात्रि भोजन त्याग, अहंकार, घमंड आदि से दूर रहकर हेय और उपादेय का विवेक रख वह घर परिवार और समाज को खुषहाल बनाती है।

आइये! देखें जैन धर्म ध्वजा को फहराती उन महान नारियों को जिन्होंने गृहस्थ जीवन का निर्वहन करते हुए धर्म एवं संस्कृति की रक्षा की। 'शीलवती सीता' का संपूर्ण जीवन सुख-दुख, साता असाता कर्मों के खेल में बीता। इस महान नारी ने दीक्षा ग्रहण की और धर्म की शरण लेकर नारी पर्याय को सफल बनाया। 'सती अंजना ' ने अपने कर्मोदय में आये फलों को भोगा और पश्चाताप किया। 'राजुल' के चरित्र ने तो नारी जाति के त्याग की कथा रच दी, एक पल नहीं लगा और राग से वैराग्य पथ की ओर चल पड़ी। आर्यिका व्रत को धारण करने वाली 'द्रौपदी' क्षमा की प्रतिमूर्ति कहलायी। अपने पति को जिनधर्म में लगाने वाली 'रानी चेलना' आज नारी जाति में पति को सन्मार्ग पर लाने वाली अपना उदाहरण आप बन गयी। पति के दीक्षा लेने पर 'सुलोचना' ने भी आर्यिका पद धारण कर लिया। नगर के बंद दरवाजे को 'षीलवती मनोरमा' ने खोल जैन धर्म की जय जयकार करवाई। कर्मों से खेलने वाली संकल्प की धनी 'अनंतमति' ने दीक्षा लेकर नारी पर्याय को सफल बनाया। पति की सेवा एवं धर्म परायणता के माध्यम से अषुभ कर्म को शांत करती हुई 'मैना सुंदरी' आज भी नारियों की पथगामिनी बनी है।

'ब्राह्मी सुंदरी' ने बता दिया कि कैसे त्याग और संयम की साधना से जीवन सफल बनाया जा सकता है। समाज की विडम्बनाओं और परिस्थितियों से टकराने वाली 'चंदना' युगनायक भगवान महावीर की मुख्य अर्यिका बनी। 'सति सोया' ने ससुराल की प्रतिकूलता में भी देव शास्त्र गुरू के प्रति श्रद्धा रखकर अपने सभी संकटों को दूर किया। विपरीत परिस्थितियों में भी गजमोती चढ़ाने का नियम पालन करने वाली 'मनोवती' की धर्म प्रभावना अनुकरणीय है। अहिंसा की देवी 'अनंगशरा' ने जीव दया शांत भाव से मरण प्राप्त कर सद्गति पायी। 'रानी विशल्या' को मिली औषधीय शक्ति ने अनेक लोगों की पीड़ा दूर की। देव-शास्त्र गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा रखने वाली 'रेवती रानी' अमूढ़ दृष्टि अंग में प्रसिद्ध हो गयी। 'सेठानी विजया' का ब्रह्मचर्य व्रत पालन गृहस्थों के लिए अनुपम उदाहरण बन गया। शिवा देवी, मृगावती, वनमाला, दमयन्ती, गुणसुन्दरी, रानी उर्विला, कैकयी, मंदोदर, मदन रेखा, नीली बाई, प्रभावती, जम्बू कुमार की नवविवाहिता पत्नियां आदि अनेकानेक नारियां जैन धर्म संस्कृति की रक्षा में सदैव तत्वर रहीं।

दक्षिण भारत के गंगवंश एवं अन्य राज्य वंशों की महिलाओं ने जैन धर्म की प्रभावना और मंदिरों की व्यवस्थाओं में तन-मन-धन से सहयोग दिया। दक्षिण भारत की जो वैभवशाली परम्परा हम देख रहे हैं, उसमें महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। इन धार्मिक महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है। इन धार्मिक महिलाओं ने न केवल अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन किया अपितु राज्य के संचालन, युद्धभूमि के मैदान एवं धर्म प्रभावना में महती भूमिका निभायी है। मां काललदेवी, अजिता देवी, सरस्वती, गुल्लिकाय जी, वीरांगना सावियव्वे, विदूषी पप्पादेवी, शान्तलादेवी, देवमति, आदि अनेक जैन नारियां अपने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं साहित्यक उपलब्धियों के कारण इतिहास में अमर हो गयी।

उपरोक्त सभी आदर्शनारियों के कथानक आज की नारियों के पथप्रदर्शक के रूप में हैं। प्रायः ये सभी नारियां उच्चकुल की प्रतिष्ठावान, संस्कारों युक्त थी।

अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति सजग थीं। कर्मों की विचित्र लीलाओं को इन्होंने देखा और धर्म की शरण में आकर अपने आपको संभाला और कल्याण एवं शांति के मार्ग पर चल पड़ी।

जैनधर्म एवं संस्कृति की यह परम्परा सतत रूप से चली आ रही है। महिला रत्न मगनबाई, कुकुंलाई, मां श्री चंदाबाई, पद्मश्री सुमतिबाई, कमला बाई, चिरौंजाबाई, बानुबाई, रमा रानी आदि अनेक नारियां जैन धर्म ध्वजा की पथगामिनी बनीं।

नारी पर्याय को सार्थक बनाती हुई अनेका नारियां संयम-त्याग के मार्ग पर चलकर अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। समाधिस्थ आर्यिका विशुद्धमति माता जी, आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी ने अपने संघ के साथ धर्म प्रभावना, साहित्य साधना एंव अनेक लोकल्याणकारी कार्य किए। गणिनी आर्यिका ज्ञानमति माताजी, विशुद्धमति माताजी, गुरूमति माताजी दृढ़मति माताजी सहित देश में 37 गणिनी आर्यिका माताजी 527 आर्यिका माताजी, 174 क्षुल्लिका माताजी एवं अनेक ब्रहम्चारिणी बहनें संयम पथ पर चलती हुई नारी पर्याय को सफल बना रही हैं। धर्म की प्रभावना कर रही हैं। अनेक वीर नारियों ने देश की आजादी की लड़ाई में सराहनीय योगदान देकर देश को स्वतंत्रता दिलाई।

बदलते परिवेश में धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों की कमी दिखाई दे रही है। पारिवारिक समरसता का अभाव, एकल परिवार, बड़ों के प्रति सम्मान की भावना में कमी, जैनेत्तर विवाह सम्बन्ध, रिलेशनशिप में रहना, भ्रूण हत्या आदि विसंगतियों ने हमारी सामाजिक व्यवस्था को ठेस पहुंचाई है। ब्यूटी संस्कृति, क्लब संस्कृति और क्वीन संस्कृति खूब फल फूल रही है। नारी देह का प्रदर्शन और सजी संवरी नारियां भोग्या के रूप में सामने आ रही हैं। फेसबुक, इंटरनेट आदि में नारी के तन-मन को भ्रमित कर दिया है। हिंसा जन्य सामग्री किसी न किसी माध्यम से हमारे घरों में प्रवेश कर रही है। असंतोष, संवेदनहीनता, सहनशीलता, ईर्ष्या, द्वेष जैसी प्रवृत्तियों ने अपना जाल बिछा दिया है। यह सब नारीयोचित गुणों पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के उच्च पदों से लेकर सांसद, विधायक, मेयर, प्रधान, बैंक, शिक्षा, डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए., वकील, सेना आदि सभी क्षेत्रों में महिलाएं अपनी सकारात्मक भूमिका निभा रही हैं। घरेलू महिलाएं भी अपनी रचनात्मक भूमिका में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। आवष्यक है कि इनकी सकारात्मक ऊर्जा का धर्म के संरक्षण और समाज के विकास में भी योगदान मिले।

आज सभी महिलाओं /नारियों से विनम्र अपील है कि उक्त परम्परागत विरासत जो हमें मिली है उसे और समृद्ध कर, संजोकर आने वाली पीढ़ी को संस्कारित करें ताकि जैन धर्म ध्वजा सदैव फहराती रहे।

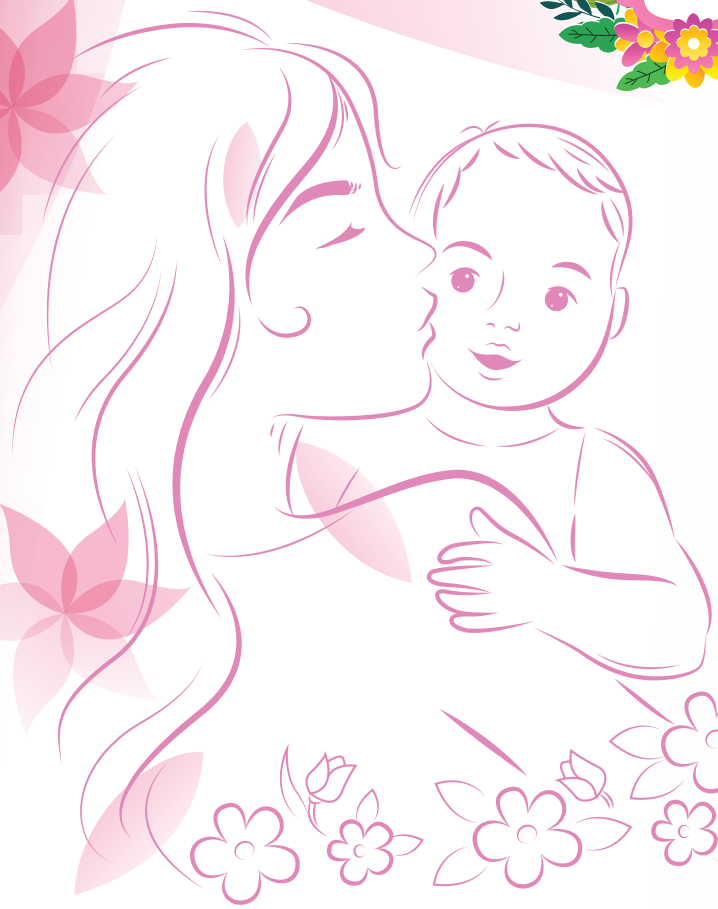

मातृ समाज कैसे बदल रहा है और क्या करना चाहिए?

आज भी चंदनबाला, अनन्तमती जैसी कन्याएँ हैं। सीता, मैना, मनोरमा जैसी पतिभक्ता हैं, चेतना जैसी कर्तव्यपारायणा हैं और ब्राह्मी-सुन्दरी के पदचिन्हों पर चलने वाली आर्यिकाएँ हैं, हमारी बहनों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए।

हर समाज में समय के साथ बदलाव आते हैं। जैन समाज में भी कई बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इसी क्रम में जैन महिलाओं में भी कई तरह के बदलाव देखे जा रहे हैं। उनके सोचने के तरीके, पहनावे, बातचीत के तरीकों में कई बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

संसार की दृष्टि में स्त्री और पुरुष दो अंग हैं। जैसे कुंभकार के बिना चाक से बर्तन नहीं बन सकते हैं अथवा कृषक के बिना पृथ्वी से धान्य की फसल नहीं हो सकती है उसी प्रकार स्त्री-पुरुष दोनों के संयोग के बिना सृष्टि की परम्परा नहीं चल सकती है। इतना सब कुछ होते हुए भी महिलाओं का दायित्व कुछ विशेष ही है। वह क्या है? उसी पर कुछ प्रकाश डाला जाता है- आज जब घर में कन्या का जन्म होता है, तब घर वाले ही क्या, अड़ोस-पड़ोस के लोग भी यही सोचने लगते हैं कि यह क्या बला आ गई? इसका मूल कारण है दहेज। इस दहेज प्रथा ने कितने अनर्थों को जन्म दिया है, यह सब प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो रहा है। एक समय था, जब कन्या को सबसे श्रेष्ठ रत्न और उनके माता-पिता को सबसे श्रेष्ठ रत्नाकर माना जाता था। देखिए पूर्वाचार्यों के वाक्य-

''कन्यारत्नात्परं नान्यद्। कन्यारत्न से बढ़कर अन्य कोई रत्न नहीं है। तथा- रत्नाकरत्वदुर्गर्वमम्बुधिः श्रयते वृथा।'' यह समुद्र अपने-''रत्नाकरत्व'' नाम के खोटे अभिमान को व्यर्थ ही धारण कर रहा है क्योंकि जहाँ इस कन्यारत्न ने जन्म लिया है, ऐसे उसके माता-पिता में ही रत्नाकरपना शोभित होता है अर्थात् कन्यारत्न के जन्मदाता माता-पिता ही सच्चे रत्नों की खान-रत्नाकर होते हैं।

यह बात सुलोचना के स्वयंवर के प्रसंग पर श्री गुणभद्राचार्य ने कही है। वास्तव में जहाँ एक कन्या के स्वयंवर के समय करोड़ों राजा-महाराजा आकर उपस्थित होते थे और सबके मन में यही आशा रहती थी कि यह कन्या मेरे गले में वरमाला डाले। इस विषय में सुलोचना, सीता, द्रौपदी आदि के प्रत्यक्ष उदाहरण आबाल-गोपाल प्रसिद्ध ही हैं लेकिन आज सर्वथा इसके विपरीत स्थिति देखने को मिलती है। कन्याओं के जन्म को हीन दृष्टि से देखने का मूल कारण जो दहेज है, उसका वैसे निर्मूल्ना किया जाये? इस पर महिलाओं को सक्रिय कदम उठाना चाहिए। महिलाएँ ही महापुरुषों की जननी हैं। तीर्थंकर जैसे नर-रत्नों को भी जन्म देने का सौभाग्य महिलाओं ने ही प्राप्त किया है। यही कारण है कि महामुनियों ने भी उनकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा है।

प्रायः आजकल महिलाएँ पति को प्रसन्न रखने के लिए उनके साथ क्लबों में घूमना व स्वच्छंद प्रवृत्ति करना ही अपना कर्तव्य समझ लेती हैं। कोई-कोई महिलाएँ तो पति के साथ रात्रिभोजन ही क्या, मदिरापान आदि भी करने लगती हैं। भोगों में ही सुख मानने वाली कुछ महिलाएँ तो पति को दुर्व्यसनों से नहीं रोक पाती हैं किन्तु धर्मकार्य से गुरुओं के पास जाने से अवश्य रोक देती हैं।

आज कितने ही ऐसे उदाहरण देखने में आते रहते हैं।

जिस घर को शरण समझते हैं वह अशरण हैं, बन्धुवर्ग बंधन के मूल कारण हैं और चिरकाल से परिचित भी स्त्रियाँ आपत्ति के घर का द्वार हैं। ये वाक्य श्रीगुणभद्रसूरि के हैं किन्तु शीलवती महिलाएँ इससे विपरीत सन्मार्गदर्शिका भी देखी जाती हैं।

महिलाओं का अपनी संतान के प्रति भी क्या कर्तव्य है? वास्तव में जो महिलाएँ सुशिक्षित हैं, वे अपनी संतान को सुयोग सांचे में डाल सकती हैं क्योंकि माताओं की गोद ही बच्चों के लिए प्रारंभिक पाठशाला है। माताएँ बच्चों को प्रारंभ से ही लाड़-प्यार के साथ धर्म की घूँटी पिला-पिलाकर सुसंस्कारों से हृष्ट-पुष्ट बना सकती हैं। जब बच्चे कुछ समझने और बोलने लग जाएँ तब उन्हें महामंत्र सिखाना, अच्छे-अच्छे धार्मिक भजनों की पंक्तियाँ रटाना, जैसे-जैसे वे 3-4 वर्ष के होते जाएँ, उन्हें छोटी-छोटी शिक्षास्पद कथाएँ सुनाना, धार्मिक पाठशालाओं में कुछ न कुछ धर्म शिक्षा दिलाते रहना ही बच्चों को सुसंस्कारित करना है। किशोरावस्था में उन्हें कुसंगति से बचाना, मंदिरों में जाने की प्रेरणा देते रहना, गुरुओं के पास ले जाना, तीर्थयात्राओं की वंदना कराते रहना, उनके जीवन में सद्विचारों के बीजारोपण करना है। खासकर ग्रीष्मावकाश में बालक-बालिकाओं को गुरुओं के पास धर्म शिक्षा दिलाना, धार्मिक पढ़ाई में शिक्षण शिविरों में भाग दिलाना, छुट्टी के दिनों का बहुत बड़ा सदुपयोग है।

युवकों को धर्म कथाओं के माध्यम से चारित्रवान बनाना चाहिए। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र, जंबूकुमार, अकलंक, निकलंक आदि महापुरुषों के आदर्श बालकों के समक्ष पुनः-पुनः कहते रहने से उनमें वैसे बनने के संस्कार सहज ही हो सकते हैं।

कन्याओं के शील की सुरक्षा कैसे रहे? इस पर भी उनके माता-पिता को सावधान रहना चाहिए। छोटी-छोटी बालिकाओं को कुसंगति से बचाना, युवक नौकरों को घर में न रखना, एक साथ लड़के-लड़कियों को न पढ़ाना, युवक अध्यापक से न पढ़ाना, अश्लील उपन्यास पढ़ने से, अश्लील सिनेमा आदि देखने से दूर रखना चाहिए। प्राचीनकाल में भी राजघरानों में तथा सभ्य घरानों में वृद्ध कंचुकी नौकर रहते थे जिससे कन्याओं की ही नहीं बल्कि युवती महिलाओं के भी शील की सुरक्षा बनी रहती थी। सहशिक्षा की प्रणाली कथमपि श्रेयस्कर नहीं है उसके फलस्वरूप कुछ न कुछ अघटित घटनाएँ होती ही रहती हैं। किशोरावस्था की बालिकाओं को यदि युवक अध्यापक पढ़ाते हैं, तो प्रायः उनके शील का अपहरण हो जाया करता है। अश्लील कहानियों और चलचित्रों का कुप्रभाव कोमल और सरल मस्तिष्क को विकृत बनाये बगैर नहीं रहता है।

कन्या विवाह के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर माता बनती है। जिस प्रकार कोयल की खान से कोयला और हीरे की खान से हीरा निकलता है उसी प्रकार अच्छे संस्कारों से संस्कारित शीलवती माता से अच्छे-अच्छे नररत्न और कन्या रत्नों का जन्म होता है। दुराचारिणी माता की संतान कभी भी अच्छी नहीं मानी जा सकती है। कुछ प्राकृतिक सृष्टि की व्यवस्था ही ऐसी है। चक्रवर्ती, अर्धचक्री आदि महापुरुषों के अनेक रानियाँ होती हैं, उन सब रानियों की संतान एक पिता की ही होती है किन्तु यदि कोई महिला अनेक पुरुष से समागम करती हो, तो वह स्वयं यह निर्णय नहीं दे सकती है कि इस मेरे पुत्र का पिता कौन है? यही कारण है कि अपने यहाँ भारतीय संस्कृति में महिलाओं के लिए एक पति ही माना गया है। वैसे यह विषय अतिसूक्ष्म है। विशेष जिज्ञासु महिलाओं को अपने धर्मगुरु व मुनियों के पास में इस विषय को समझना चाहिए इसीलिए पुनर्विवाह, विधवा विवाह, विजातीय विवाह आदि परम्पराएँ आर्य संस्कृति से बाह्य हैं।

शीलवती महिलाएँ मनुष्यों से ही नहीं देवों से भी पूज्यता प्राप्त कर लेती हैं। शील के प्रभाव से अग्नि का जल हो जाना, सर्प का हार हो जाना, वङ्का

वास्तव में जो महिलाएँ सुशिक्षित हैं, वे अपनी संतान को सुयोग सांचे में डाल सकती हैं क्योंकि माताओं की गोद ही बच्चों के लिए प्रारंभिक पाठशाला है। माताएँ बच्चों को प्रारंभ से ही लाड़-प्यार के साथ धर्म की घूँटी पिला-पिलाकर सुसंस्कारों से हृष्ट-पुष्ट बना सकती हैं।

के फाटक खुल जाना आदि उदाहरण मात्र कल्पनाएँ ही नहीं हैं, आज भी यदि कोई महिला अपने शील को सुरक्षित रखकर अग्नि को जल बनाना चाहे तो सहज सफल हो सकती है। आत्मविश्वास बहुत बड़ी चीज है। यह नियम है कि पंचमकाल के अंत तक भी शीलवती महिलाएँ रहेंगी और आगे छठे काल में भी उनकी परम्परा चल सकेगी पुनरपि आने वाले चतुर्थकाल में उन्हीं शीलव्रती महिलाओं के वंश में तीर्थंकर आदि महापुरुष जन्म लेवेंगे, यह तो सब एकदेश ब्रह्मचर्य अणुव्रत की महत्ता है। ऐसी ब्रह्मचर्याणुव्रत पालन करने वाली महिलाएँ गृहस्थाश्रम में रहकर भी देवपूजा, गुरुपासना, स्वाध्याय आदि करते हुए धर्म की परम्परा को अक्षुण्ण रखती हैं अनन्तर सल्लेखना से मरण करके सम्यक्त्व और अणुव्रत के प्रभाव से स्त्रीलिंग को छेदकर सौधर्म आदि स्वर्ग में देव हो जाती हैं। कालान्तर में पुरुषलिंग प्राप्तकर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त कर लेती हैं।

जो महिलाएँ पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत पालन करती हैं, व्रत प्रतिमा आदि व्रतों से अपने शरीर को अलंकृत करती हैं, क्षुल्लिका अथवा आर्यिका बन जाती हैं, वे महिलाएँ ब्राह्मी-सुन्दरी के समान सर्वजनों में पूज्य हो जाती हैं। चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण आदि महापुरुष भी उनकी पूजा करते हैं, उन्हें आहारदान आदि देकर अपने को धन्य मानते हैं। इंद्र भी उनके चरणों की वंदना करते हैं। इस प्रकार से वे स्त्रियाँ सर्वश्रेष्ठ आर्यिका पद में तीनों लोकों में वंद्य हो जाती हैं।

आज भी चंदनबाला, अनन्तमती जैसी कन्याएँ हैं। सीता, मैना, मनोरमा जैसी पतिभक्ता हैं, चेतना जैसी कर्तव्यपारायणा हैं और ब्राह्मी-सुन्दरी के पदचिन्हों पर चलने वाली आर्यिकाएँ हैं, हमारी बहनों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। प्रतिवर्ष एक माह नहीं तो कम से कम एक सप्ताह आर्यिका माताओं के सानिध्य में जाकर उनसे कुछ सीखना चाहिए और स्त्रीसमाज में बढ़ती हुई दहेज प्रथा, सहशिक्षा आदि कुरीतियों को दूर करने में अपने समय को, शक्ति को और धन को लगाना चाहिए।

जैन महिलाएं किसी से नहीं हैं कम

हर समाज में कुछ महिलाएं ऐसी होती हैं, जो पूरे समाज का नाम गर्व से ऊंचा कर देती हैं। जैन समाज में भी ऐसी कई महिलाएं हैं, जिन्होंने अपने कारनामों से हर जैन परिवार का मान बढ़ाया है। जानते हैं ऐसी महिलाओं के बारे में-

विनीता जैन

लोकप्रिय धारावाहिक 'कौन बनेगा करोड़पति' के दसवें संस्करण में असम के गुवाहाटी की रहने वाली विनीता जैन ने 1 करोड़ रुपए जीतकर महिलाओं के लिए नई मिसाल कायम की है। इसके साथ ही विनीता जैन इस संस्करण की पहली करोड़पति बन गई है और साथ ही में सात करोड़ रुपए यानी 'कोटी की चोटी' का प्रश्न खेलने वाली पहली प्रतिभागी भी बन चुकी है। हालांकि वे सात करोड़ रुपए के प्रश्न का उत्तर नहीं दे पायीं और उन्होंने गेम को बीच में ही छोड़ने का निर्णय लिया। लेकिन यदि वे सात करोड़ रुपए के प्रश्न का उत्तर देने में रिस्क लेतीं तो सात करोड़ रुपए जीत जातीं क्योंकि गेम क्विट करने के बाद उनके द्वारा बताया गया उत्तर बिलकुल सही था। खैर, लालच बुरी बला है और उत्तर की पूर्ण पुष्टि न होने के कारण विनीता जैन के द्वारा लिया गया यह निर्णय एक सूझबूझ वाले प्रतिभागी की निशानी को साबित करता है। जिस तरह से विनीता जैन ने अपने ज्ञान के बलबूते पर एक के बाद एक आने वाले प्रश्नों का उत्तर दिया वह वाकई में काबिलेतारीफ है। खासकर उन तमाम महिलाओं के लिए सबक है, जो अपने को एक महिला होने के नाते कमजोर समझती हैं और साथ में उन समस्त लोगों की दकियानूसी सोच पर कड़ा प्रहार है, जो बालिकाओं को पराया धन समझकर उनकी शिक्षा पर ग्रहण लगाते हैं। विनीता जैन ने शो के दौरान बताया कि उनकी शादी वर्ष 1991 में हुई थी और 6-7 साल के अंदर वह बेटे रोहित और बेटी काव्या की मां बन गयीं। इसके बाद 2003 में पति बिजनेस के सिलसिले में बाहर गये, तभी आतंकवादियों ने उनका अपहरण कर लिया था। तब से अब तक उनका कोई अता-पता नहीं है। अकेलेपन से जूझने और डिप्रेशन से बचने के लिए वह ट्यूशन पढ़ाने लगीं। उनकी मानें तो वे पढ़ा भी रही हैं और पढ़ भी रही हैं। उन्होंने बताया कि जल्दी शादी होने की वजह से वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पायी थीं, इसलिए अब आगे पढ़ने का फैसला लिया। निःसंदेह, विनीता जैन ने ऐसा करके साबित कर दिया कि पढ़ने और सीखने की कोई उम्र नहीं होती है और धैर्य, लगन व कठिन परिश्रम के साथ किसी भी परिस्थिति में अपने हुनर को सिद्ध किया जा सकता है। पति के अपहरण के बाद उनके अभाव में घर, परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को निभाते हुए जिस तरह से उन्होंने स्वयं को शिक्षित करने का निर्णय लिया वह उनकी जीवटता और जिजीविषा का प्रमाण है। शो के दौरान गेम के होस्ट महानायक अमिताभ बच्चन भी विनीता जैन के जीवन संघर्ष और उनके प्रश्नों के उत्तर देने के तरीके के प्रभावित होकर उनकी तारीफ करने से खुद को रोक नहीं पाये। इस तरह 'कौन बनेगा करोड़पति' के इतिहास में विनीता जैन ने एक करोड़ रुपए जीतने वाली पांचवीं महिला बनने का खिताब अपने नाम कर लिया।

आचार्य श्री चंदना जी

जैन धर्म के 2600 वर्षों के इतिहास में आचार्य श्री चंदना जी पहली जैन महिला आचार्य हैं। साथ ही आधुनिक जैन धर्म में वे पहली ऐसी संत है जिन्होंने जैन परम्परा को नया मार्ग दिखाया। वह मार्ग है सेवा का। आमतौर पर जैन आचार्य, संत और साध्वी मोक्ष को आत्म-कल्याण का मार्ग मानते थे, लेकिन इन्होंने परम्पराओं में क्रांतिकारी बदलाव की शुरुआत की और बताया कि धर्म केवल मोक्ष प्राप्ति के लिये ही नहीं है, बल्कि जीवन की चुनौतियों के निवारण के लिये भी है। इन्होंने संन्यास को व्यक्तिगत मुक्ति से ऊपर समाज विकास के प्रयासों में बदल दिया।

इन्होंने सेवा का व्यवहारिक मार्ग अपनाया और लोगों में सन्देश दिया कि सेवा ही मुक्ति का मुख्य मार्ग है। इनका मुख्य सूत्र है – "मुस्कान से मोक्ष"। आचार्य श्री चंदना जी अशिक्षा, अज्ञानता और चारों ओर फैली विषमताओं से निवारण के लिये सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं।

मेघा जैन

पेशे से चार्टड एकाउंटेंट 29 वर्षीय मेघा जैन ने फाइटर विमान मिग-29 को साढ़े 18 हजार मीटर की ऊंचाई पर 1850 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ाकर अपना नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज करवा लिया है। मेघा जैन देश की पहली ऐसी सिविलियन महिला हैं, जिन्होंने फाइटर विमान को इतनी ऊंचाई पर उड़ाया। बचपन से खतरों से न डरने वाली मेघा का नाम अब लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड-2018 में दर्ज हो गया है। कम्पनी गतिविधि के सिलसिले में वे रूस गई हुई थी और एक स्कीम के तहत उन्हें फाइटर विमान उड़ाने का यह मौका मिला। रूस में वे एयरबेस पर गई और फाइटर मिग-29 को देख मेघा ने यूं ही मजाक में कह दिया क्या वह विमान में बैठ सकती हैं। इस पर अधिकारियों ने कहा कि आप न सिर्फ बैठ सकती हैं, बल्कि इसे उड़ा भी सकती हैं। उन्हें यकीन नहीं हुआ कि विमान उड़ाने की बात हो रही है। अधिकारियों ने बताया कि सिविलियन स्कीम के तहत विमान उड़ाया जा सकता है। इसके बाद एयरबेस की तरफ से सभी मेडीकल चेकअप करवाये गये, जिसमें कई प्रकार के टेस्ट हुए, जो सभी फिट निकले। मेघा ने बताया कि इस खतरनाक ड्राईव के बारे में उन्होंने अपने परिवार में किसी को कुछ नहीं बताया क्योंकि यदि बताती तो मेरे घर वाले मुझे नहीं करने देते। इससे पहले मेघा ने अमेरिका में 15 हजार मीटर की ऊंचाई पर स्काई ड्राइविंग कर चुकी हैं।

इंदु जैन

इंदु जैन भारत के बड़े मीडिया ग्रुप बेनेट कोलमैन ऐंड कंपनी की चेयरपर्सन और देश की दूसरी महिला अरबपति हैं। वे 11,400 करोड़ रुपए (1.9 बिलियन अमेरिकन डॉलर) की मालकिन है। फोर्ब्स के मुताबिक, इंदु जैन की कुल संपत्ति 11,400 करोड़ रुपए है। भारत के अरबपतियों में उनका स्थान 29वां है। उनकी शादी स्वर्गीय अशोक कुमार जैन से हुई थी। उनके दो बेटे हैं- समीर और विनीत जैन। इंदु जैन एक अग्रवाल जैन हैं और साहु जैन परिवार ताल्लुक रखती हैं। बेनेट कोलमैन ऐंड कंपनी देश के सबसे बड़े मीडिया ग्रुपों में से एक है। इसकी स्थापना वर्ष 1838 में हुई थी। बाद में यानी 1948 में रामकृष्ण डालमिया ने कंपनी बेनेट कोलमैन के हाथों बेच दी थी। इस ग्रुप के साथ कई ब्रांड नेम जुड़े हुए हैं। इंदु जैन धर्मार्थ के कार्यों से भी जुड़ी हुई हैं और धार्मिक कॉलम भी लिखती हैं। महिलाओं के अधिकार को लेकर भी सक्रिय हैं। भारतीय ज्ञानपीठ फाउंडेशन, जो साहित्य के क्षेत्र में बेहतरीन कार्य करने वाले को ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजती है, उसकी चेयरपर्सन हैं। उन्होंने वर्ष 2000 में यूनाइटेड नेशन में मिलिनियम वर्ल्ड पीस समिट में भाषण भी दिया था।

अंजू जैन

अंजू जैन (जन्म : 11 अगस्त 1974, नई दिल्ली एक पूर्व भारतीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी है जो भारतीय महिला क्रिकेट टीम की ओर से 1995 से 2003 तक आठ टेस्ट मैच खेले थे और 1995 से 2005 तक कुल 65 एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों में टीम का हिस्सा रही थी। यह टीम की एक विकेट-कीपर रहती थी। इन्होंने कुल 8 वनडे मैचों में भारतीय टीम की कप्तानी की थी सारे मैच 2000 महिला क्रिकेट विश्व कप के थे। अंजू जैन घरेलू क्रिकेट मैच एयर इंडिया महिला क्रिकेट टीम की ओर से खेलती थी। 2005 में भारत के राष्ट्रपति ऐ॰ पी॰ जे॰ अब्दुल कलाम ने अंजू को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया था।

आजादी की लड़ाई में जैन महिलाओं का अवदान

डॉ. ज्योति जैन, खतौली

आधुनिकीकरण, भूमंडलीकरण के बीच महिलाओं का बदलता मानस पटल आधी आबादी को जागरुक बना रहा है, गतिशील बना रहा है। भारतीय समाज एवं संस्कृति में पुरुष-नारी दोनों की भूमिका को कंधे से कंधा मिलाकर चलने जैसा माना गया है। भारतीय संविधान में भी स्त्री-पुरुष दोनों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं। आज शिक्षा का बढ़ता दायरा, महिला संगठन एवं अधिकारों के प्रति चेतना से महिलाओं का आत्म विश्वास बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है।

जैन परंपरा में भी नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। धर्म कला, संस्कृति आदि में नारी को समान अधिकार प्राप्त हैं। जैन धर्म की इसी उदार भावना ने जहां नारी को पारिवारिक, सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाया, वहीं उसे आत्म कल्याण की और भी प्रेरित किया। भगवान आदिनाथ से लेकर भगवान महावीर तक और भगवान महावीर से लेकर आज तक जैन नारियों के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण की परंपरा विरासत से चली आ रही है।

हमारा देश एक लंबे समय तक पराधीन रहा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष चलता रहा। आजादी के इतिहास और नवराष्ट्र के निर्माण की धारा में देश की महिलाओं के अवदान का सही-सही आकलन नहीं हो पाया है। जैन महिलाओं का मूल्यांकन तो न के बराबर है। प्रस्तुत लेख के माध्यम से उनके अवदान को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

इतिहास साक्षी है कि स्वाधीनता के इस महासमर में महिलाओं ने अपनी सामाजिक सीमा को ध्यान में रखते हुए पूरे जोशोखरोश के साथ कदम से कदम मिलाकर राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। उस समय स्त्रियों का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक सीमित था। फिर भी महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलनों में हिस्सा लिया। अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने की इस लड़ाई में अनेक वीर महिलाएं सामने आईं जिन्होंने अपना सब कुछ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में समर्पित कर दिया। स्वतंत्रता की इस लड़ाई में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उनके योगदान को समाज और देश कभी नहीं भूल पायेगा।

स्वाधीनता के समय में जब अनेक नारियों ने अपनी सक्रियता दिखाई तो जैन महिलाएं भी सामने आईं। यद्यपि यह वह समय था जब महिलाओं में विशेष जागृति नहीं थी। परंपरागत, रुढ़िवादी परिवारों में घूंघट आदि प्रथा के कारण घर से बाहर निकल कर काम करना ठीक नहीं समझा जाता था फिर भी जैन महिलाएं घर से बाहर निकलीं और आजादी के लड़ाई में सक्रिय बनीं। आजादी के दीवानों और क्रान्तिकारियों के परिवार तो अपने आप ही इस

लड़ाई में शामिल हो गए थे। जैन महिलाएं अपने राष्ट्रप्रेम का परिचय देते हुए आंदोलनकारी गतिविधियों से जुड़ गयीं। घर-घर चरखे काते जाने लगे और खादी एवं स्वदेशी भावना का प्रचार हुआ। विदेशी कपड़ों की होलियां जलाई गयीं, शराब की दुकानों पर धरना दिया गया। महिलाओं के षिक्षित वर्ग ने लेख, गीत, भाषण आदि के माध्यम से आंदोलन की गति को बनाए रखा। महिलाओं की सक्रियता यहां तक हो गयी कि सभाएं, धरना, जुलूस आदि निकालना साथ ही लाठी, गोली खाकर जेल तक जाने का कार्यक्रम शुरू हो गया। इस तरह इन महिलाओं ने अपना सबकुछ देश के लिए न्योछावर करने की ठान ली। उनके जुझारू संघर्ष का चरित्र सदैव प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

आइये! भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में समर्पित उन जैन वीर महिलाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें जिन्होंने सक्रियता से भारत मां को परतन्त्रता की बेड़ियों से आजाद कराया।

आगरा की श्रीमती अंगूरी देवी जिन्होंने आजादी के आंदोलन में वह अलख जगायी कि आगरा नगर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से गूंज उठा। अपने पति महेन्द्र जैन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। 1930 में एक सभा में भाषण करने के दौरान पुलिस ने गिरफ्तार कर इन्हें जेल भेज दिया। उस समय आप गर्भवती थीं। नमक सत्याग्रह के दौरान आप पुनः गिरफ्तार हुईं। 1932 के सत्याग्रह आन्दोलन में आपने अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी। उनका कहाना था कि अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेजकर रखना प्रत्येक महिला का कर्तव्य है।

- अजमेर के प्रसिद्ध देशप्रेमी जीतमल लूणिया की धर्मपत्नी श्रीमती सरदार कुंवरबाई लूणिया राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ जेल में रहीं।
- मेरठ की श्रीमती कमला देवी को 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में भाग लेने के कारण जेल की सजा भुगतनी पड़ी।
- कनपुर के प्रसिद्ध देशभक्त वैद्य कन्हैयाला जैन की धर्म पत्नी गंगाबाई जैन ने न केवल स्वदेशी का प्रचार किया अपितु साइमन कमीषन वापिस जाओ, दांडी यात्रा, नमक सत्याग्रह आदि आन्दोलनों द्वारा महिलाओं को जागृत किया एवं कारावास झेलना पड़ा।
- नागपुर की श्रीमती धनवती बाई रांका और उनकी देवरानी श्रीमती सरस्वती देवी रांका राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लेने के कारण अनेक बार जेल गयीं।
- 1942 के राष्ट्रव्यापी आंदोलन में अहमदाबाद की जयावती संघवी शहीद हो गयीं।
- प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी पं.परमेष्ठीदास जी की पत्नी श्रीमती कमला देवी को सभाबन्दी कानून भंग करने के कारण पांच महीने साबरमती जेल में रहना पड़ा।
- कानपुर की श्रीमती कमला सोहनराय ने राष्ट्रीय आन्दोलनों में समर्पित भाव से अपनी भूमिका निभायी एवं जेल यात्रा की।
- पूज्य बापू के आश्रम में रहने वाली कांचन जैन ने भी आंदोलन के दौरान कारावास की सजा भोगी।
- ललितपुर की श्रीमती केषरबाई ने तन-मन-धन से इस आंदोलन में भाग लिया।
- कलकत्ता की श्रीमती गोविन्द देवी पटुआ ने बड़े उत्साह से आंदोलन में भाग लिया और जेलयात्रा की।
- उज्जैन की श्रीमती ताराबाई कासलीवाल ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया और जेलयात्रा की।
- ग्राम लथकाना, जिला जबलपुर की श्रीमती नन्हींबाई ने 1942 के आन्दोलन में अनेक माह जेल में बिताए।
- वर्धा की श्रीमती प्रेमकुमारी विषारद नागपुर जेल में रहीं।
- नीमच की श्रीमती फूलकंवर बाई चैरड़िया को अनेक बार पुलिस यातना सहनी पड़ी।
- महाराष्ट्र की क्रांतिकारी महिला राममति पाटिल ने क्रान्तिकारियों के साथ हथियार चलाना सीखा और आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।
- अहमदाबाद की सरला देवी साराभाई ने दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व किया था।
- सहारनपुर के सुप्रसिद्ध एवं संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य बाबू अमितप्रसाद जैन की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी भी आंदोलन के समय गिरफ्तार हुई।
- अम्बाला की श्रीमती लेखवती जैन ने कांग्रेस के लाहौर अधिवेषन में सक्रिय भूमिका निभायी।
- नागपुर की श्रीमती विद्यावती देवड़िया समर्पित भाव से राष्ट्रीय आन्दोलनों से जुड़ी रहीं।
- जबलपुर की श्रीमती सुन्दर देवी ने अपनी देशप्रेम से भरी कविताओं के माध्यम से जन-जन में राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाया।
- आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेंट में दो जैन महिलाएं श्रीमती लीलावती अैर रमा बहन ने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी।
- जैन बालाश्रम की संस्थापिका मां चंदाबाई के योगदान को कैसे भुलाया जा सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पं.राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस आदि नेतागण राष्ट्रीय आंदोलन के जमाने में जैन बालाश्रम आकर ठहरते थे। मां चंदाबाई ने अपनी लेखनी के माध्यम से 'जैन महिलादर्श' पत्र द्वारा समाज की नारियों को जागृत किया, नयी शिक्षा प्रदान की।
- भारत सरकार की पद्मश्री उपाधि से अलंकृत महराष्ट्र के शोलापुर की पण्डित सुमतिबाई शाह ने नारी जागरण की दिषा में अनेक कार्य किए। शोलापुर का श्राविकाश्रम आज भी हजारों नारियों का पथप्रदर्शक बना हुआ है।
- आंदोलन में भाग लेने वाली सभी महिलाओं के योगदान की चर्चा इस संक्षिप्त लेख में संभव नहीं है। जैन समाज की अनेकानेक समर्पित महिलाएं रहीं हैं जिन्होंने नारी जागरण की दिषा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। राजनैतिक चेतना के साथ-साथ षिक्षा संस्थाओं के माध्यम से जैन समाज की महिलाओं ने जो शिक्षारूपी बीज बोए उसका ही प्रतिफल है कि आज देश की जनगणना में जैन नारियां सर्वाधिक षिक्षित हैं। बदलते परिवेष में महिलाओं का समाज में दायरा बढता ही जा रहा है। प्रत्येक क्षेत्र में उनकी सहभागिता दिखाई दे रही है। महिला संगठनों ने शोषण के विरूद्ध आवाज उठायी है। 'मी टू' जैसी पहल नारी की अस्मिता को जगा रही है।

महिला समाज देश की शक्ति है। देश की राजनीति में दल बदलुओं, धनबल और भुजबलों की संख्या बढती जा रही है। राजनीति और प्रषासन के प्रति नारियों की संवेदनषीलता एवं कर्तव्यबोध सैद्धान्तिक राजनीति को मजबूती प्रदान करेगा। आज देश में महिलाएं बलात्कार, हिंसा, यौन उत्पीड़न, दहेज, भ्रूण हत्या जैसी समस्याओं से जूझ रही हैं। आओ हम सब मिलकर जागरूक बनें और ऐसे जुझारू संगठन बनाएं, विकसित करें कि नारी की स्वतंत्रता और अस्मिता सुरक्षित रहे।

समाज में बेटियाँ और उनके संस्कार

हमारा दायित्व है कि हम इस युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा के साथ मर्यादा और संस्कार का पाठ पढ़ायें परिवार, धर्म तथा जाति का महत्व समझायें, आज की बेटी कल का भविष्य है और यदि हमें अपना भविष्य सुरक्षित करना है तो अपनी बेटियों को दहेज के रूप में संस्कारों की पोटली थमाना होगी।

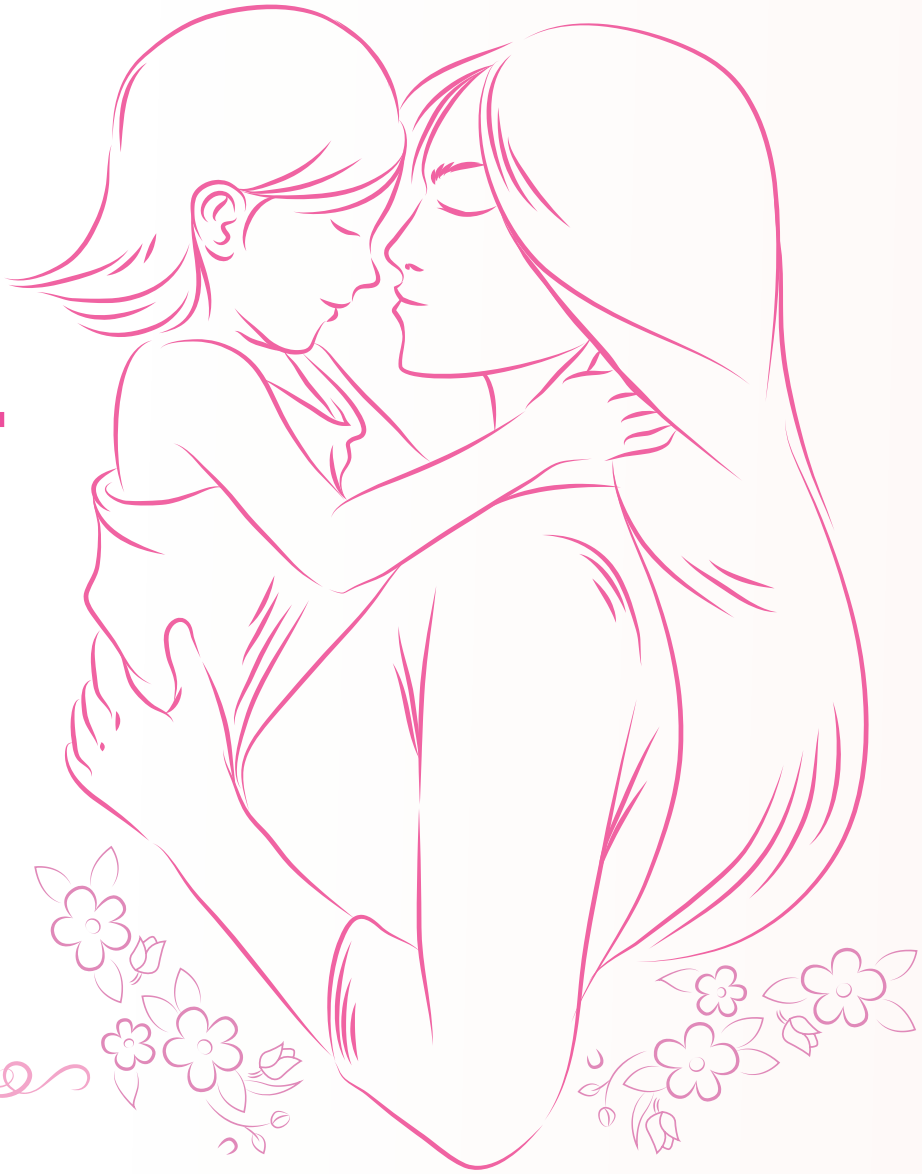

'जिस घर जाये स्वर्ग बना दे, दोनों कुल की लाज निभा दे यही बाबुलजी देंगे दुआ, कि रानी बेटी राज करेगी।'

बेटी की बिदाई के वक्त फिल्माया गया यह गीत क्या अपने शब्दों पर खरा उतरता है, क्या आज के युग में यह संभव है। क्या वर्षों से चली आ रही है मान्यताओं को इतनी आसानी से परिवर्तित किया जा सकता है। क्या बदलते सामाजिक वातावरण में यह बात सत्य हो सकती है कि पराये घर की आई हुई बेटी आपके घर में राज कर सकेगी? ऐसे अनेकानेक प्रश्न है जो आज समाज के हर व्यक्ति को व्यथित किये हुए है। यह सत्य है कि सामाजिक समीकरण बदले हैं जिनमे आज बहू-बेटियों पर वे प्रतिबंध नहीं है जिनके कारण उन्हें घुट-घुटकर जीना पड़ता था। आज बहू-बेटियां बेटों के समकक्ष कहें या उससे भी अधिक शिक्षित है, आत्म-निर्भर है, उनकी प्रगतिशील विचारधारा किसी नियम के अंतर्गत बाध्य नहीं हैं । पर्दा प्रथा हट गई है आज परिवारों में सास-ससुर और बहू के मध्य प्रत्यक्ष वार्तालाप संभव है, परिवार के अह्म पैâसलों में उनके निर्णय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इतना ही नहीं अपनी योग्यता के बल पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित करने वाली इन बहू-बेटियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी ख्याति प्राप्त कर अपने आप को प्रतिष्ठित किया है। फिर एक प्रश्न सहज ही उठता है कि हमारे धारावाहिक अपनी कहानी के माध्यम से नारी का कौन सा स्वरूप प्रस्तुत करना चाहते है ?

महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय माने जाने वाले धारावाहिक बालिका

जिस घर से बंधे हैं भाग तेरे, उस घर में सदा तेरा राज रहें होठों पे हंसी की धूप खिले, माथे पे खुशी का ताज रहे। कभी जिसकी ज्योति न हो फीकी, तुझे ऐसा रूप शृंगार मिले।

वधू को देखें तो सरपंच बिटिया बनकर लोगों के दुःख दर्द दूर करने की भावना से अपने कत्तव्य पथ पर चलने वाली आंनदी को बार-बार विरोध का सामना क्यों करना पड़ रहा है ? अपनी दादी सा द्वारा पूर्व में दी गई प्रताड़ना, शिक्षा की अभिलाषा में तड़फना, पति द्वारा उपेक्षित होना, समाज द्वारा शंकित नजरों से देखा जाना आदि कई सारी घटनाऐं हैं जो ग्रामीण इलाकों में बसे परिवारों की नारी के प्रति ओछी मानसिकता के परिचायक हैं। जबकि आनंदी ने अपने आचरण से हिन्दू-संस्कृति व पारिवारिक मानदण्डों को जीवंत रखा है, फिर त्याग और संयम की प्रतिमूर्ति नारी की आंखों में अश्रुधार क्यों है ? वहीं शिक्षित गौरी के चरित्र के रूप में एक विद्रोही, ईर्ष्यालु नारी की छवि प्रस्तुत कर आज की शिक्षा और विशेषकर नारी-शिक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। हम एक दूसरा धारावाहिक देखें दीया और बाती हम की नायिका पढ़ी लिखी, समझदार, शांत, सुशील एवं पारिवारिक दायित्वों का भलीभांति निर्वाह करने वाली बताई है, जिसे परिवार के सभी सदस्यों प्यार व सम्मान प्राप्त था किन्तु जैसे ही परिवार के सदस्यों को ज्ञात होता है कि उनकी बहू 7वीं पास नहीं अपितु 14वीं क्लास में राजस्थान में तृतीय स्थान पर आई है वैसे ही उस बहू के प्रति गर्व होने अथवा बहू को प्यार भरे आशीर्वाद देने की अपेक्षा पूरा परिवार उसके विरोध में इस तरह खड़ा हो जाता है मानों उसने कोई भयंकर अपराध किया हो।

यह सत्य है कि ये धारावाहिक समाज का स्पष्ट आईना नहीं है परंतु यह भी सत्य है कि ये समाज को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। शिक्षा का प्रभाव कहें या धारावाहिकों के द्वारा परोसी गई विकृति, आज की बेटियों में बढ़ते अहम् भाव ने, नारी स्वतंत्रता का अनुचित उपयोग करना प्रारंभ कर दिया है। स्वयं वर चयन की छूट का गलत फायदा उठाकर विजातीय विवाह स्थापित किये जा रहे हैं। विवाह पूर्व प्रेम संबंध तो सामान्य बात है विवाहेत्तर संबंध स्थापित होने के केस भी बढ़ते जा रहे हैं। तलाकों के केसों में होने वाली वृद्धि के आंकडें हमें यह सोचने को मजबूर कर रहे हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी में जैनत्व के संस्कार कैसे आयेंगें।

हम विषय केन्द्र बिंदु पर आते हैं जिसमें यह बताया गया है कि यदि संस्कारवान कन्या है तो वह जिस घर में ब्याह कर जाती है उस घर को स्वर्ग बना देती है और अपने व्यवहार से दोनों कुलों की अर्थात् पीहर तथा ससुराल दोनो का नाम रोशन करती हैं। जब तक वह पिता के घर में है अपनी मां अथवा दादी के द्वारा दी गई संस्कारों की छुट्टी से बड़ो को आदर देने वाली एवं छोटों को प्यार देने वाली होती है। आज्ञाकारी, साहसी एवं संयमी कन्या ही ससुराल में जाकर अपने सास-ससुर का आदर कर सकती है अपने पति की सहचरी बनकर उसके हर कदम पर उसका साथ देती है। चाहे सुख हो या दुःख हो वह अक्षरा (ये रिश्ता क्या कहलाता है।) के समान अपने ससुराल वालों को साथ और पति को हिम्मत बांधने वाली होती है। आवश्यकता पढ़ने पर साहस का परिचय देकर परिवार का गौरव बढ़ाती है। और इस तरह वह दोनों कुल की लाज निभाती है। बदलती हुई परिस्थितियों में, भौतिकतावादी संस्कृति के प्रति आकर्षण बढा है जिससे धर्म के स्थान पर धन का महत्व बढ़ा है इतना ही नहीं स्वतंत्रता के मायने बदले हैं तथा उच्छृंखलता के दृश्य समाज को शर्मिंदा कर रहे हैं। पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव ने नारी सुलभ शालीनता को कठघरे में खड़ा कर दिया है। अनैतिकता के परिदृष्यों से समाज का विकृत स्वरूप सामने आ रहा है कहने का तात्पर्य यह कि जिस मर्यादित, सुसंस्कृत समाज की हमारे पूर्वजों ने कल्पना करके रीति नीति निर्धारण कर सामाजिक मानदण्ड स्थापित किये थे आज उन मानदण्डों की उपेक्षा ही नहीं बल्कि उन्हें रूढ़िवादिता कहकर नकारा जाने लगा है। परिवारों में बहू-बेटियों के बढ़ते अहंकार के चलते पारिवारिक प्रतिमान टूटते जा रहे हैं, स्वार्थ परता की भावना युवा पीढ़ी के हृदय में स्थान बनाने लगी है इस कारण उनकी नजरों में परिवार का महत्व घटने लगा है। बुजुर्गों की स्थिति दयनीय हो रही है। हमारा दायित्व है कि हम इस युवा पीढ़ी को उच्च शिक्षा के साथ मर्यादा और संस्कार का पाठ पढ़ायें परिवार, धर्म तथा जाति का महत्व समझायें, आज की बेटी कल का भविष्य है और यदि हमें अपना भविष्य सुरक्षित करना है तो अपनी बेटियों को दहेज के रूप में संस्कारों की पोटली थमाना होगी। तभी निम्न पंक्तियां सार्थक हो सकेगी।

जिस घर से बंधे हैं भाग तेरे, उस घर में सदा तेरा राज रहें होठों पे हंसी की धूप खिले, माथे पे खुशी का ताज रहे। कभी जिसकी ज्योति न हो फीकी, तुझे ऐसा रूप शृंगार मिले।

अंतर्मुखी मुनि श्री 108 पूज्य सागर महाराज

बेटियों के बचने से ही समृद्ध होगी संस्कृति

भारतीय संस्कृति और जैन संस्कृति में प्रारंभ से ही बेटियों का महत्व रहा है। हम इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ की बात करें तो उन्होंने सौ पुत्र होते हुए भी अपनी दो पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को क्रमशः अक्षर और अंकगणित का ज्ञान दिया। यह बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि कि भगवान आदिनाथ बेटियों को कितना महत्व दिया करते थे। सामान्य जीवन में भी हमें शक्ति अर्जन के लिए दुर्गा की आराधना करनी होती है, ज्ञान के लिए हम देवी सरस्वती के पास जाते हैं तो धन का आकांक्षा हम मां लक्ष्मी से करते हैं। यह सार्वभौमिक सत्य है कि जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए इन तीनों की आवश्यकता होती है। ऐसे में हमें हर हाल में शक्ति की आराधना करनी ही होती है। तो सोचें कि जब धर्म और प्राचीन इतिहास में बेटियों को इतना महत्व दिया गया है तो हम क्यों वर्तमान में बेटियों को गर्भ में ही हत्या जैसा कुकृत्य कर रहे हैं। अगर ममता की पुजारी ही ममता का ही गला घोंट रही है। कहीं न कहीं इसका कारण सामाजिक और पारिवारिक कुरीतियों में छिपा हुआ है, जिन्हें निभाने की मजबूरी के चलते भी मां अपनी ममता को त्याग देती है। याद रखें ये बेटियां ही हैं जो हमारे हर मानवीय कार्य में काम आती हैं। अगर भ्रूण हत्याएं इसी प्रकार चलती रहीं तो हमारे परिवार और समाज के मांगलिक कार्य ही समाप्त होते जाएं। ऐसे में आवश्यकता है कि हम परिवार और समाज के रूप में एकजुट होकर सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'बेटी बचाओ अभियान' में एक आहूति देकर अपने कर्तव्यों को पूरा करें। बेटी बचाएं, बेटी पढ़ाएं। उसे एक सशक्त नागरिक बनाएं, ताकि हमारा राष्ट्र भी उन्नति के नए शिखर को छू सके।